इग्नू
जन जन का
विश्वविद्यालय

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

BANE-145
अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

BANE-145

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ
इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

विशेषज्ञ समिति

प्रो. अनूप के. कपूर,
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
मानवविज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,

प्रो. रश्मि सिन्हा,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. रूखशाना जमान
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. के. अनिल कुमार
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. पी. वेंकटरमणा
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. मिटू दास
सहायक प्रोफेसर,
मानव विज्ञान संकाय,
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू नई दिल्ली

पाठयक्रम निर्माण टीम

खंड	इकाई लेखक
खंड 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का परिचय	
इकाई 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास	प्रो.आर.पी. मित्रा, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अध्ययन के दृष्टिकोण	प्रो.आर.पी. मित्रा, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता	डॉ प्रशांत खत्री, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,उ.प्र.
खंड 2 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-I	
इकाई 4 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं विकास	डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली
इकाई 5 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं बाज़ार	इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली
इकाई 6 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं स्वास्थ्य'	डॉ. विजित दीपानी, परियोजना तकनीकी अधिकारी (वरिष्ठ अन्वेषक), राष्ट्रीय चिकित्सा सांख्यिकी संस्थान, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
इकाई 7 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं शरीर का मूल्यांकन	डॉ. मीनल ढल्ल, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
खंड 3 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-II	
इकाई 8 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं फोरेंसिक (न्यायिक) मानवविज्ञान	डॉ. मोनिका सैनी, सामाजिक विज्ञान विभाग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान (एनआईएचएफडब्ल्यू), नई दिल्ली
इकाई 9 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं मल्टीमीडिया	डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली
इकाई 10: अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं आपदा प्रबंधन	डॉ. प्रशांत खत्री, सहायक प्रोफेसर,, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
खंड 4 : अभ्यास में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग	
इकाई 11 उपकरण और तकनीक	उबैद अहमद डार, शोधार्थी, मानवविज्ञान संकाय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
इकाई 12 क्षमता विकास	डॉ. इंद्राणी मुखर्जी पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय,दिल्ली
इकाई 13 सिविल सोसायटी और राज्य में भागीदारी	प्रो. अवनीश कुमार, लोक नीति और शासन, प्रबंधन विकास संस्थान, गुरूग्राम, हरियाणा
सुझावित अध्ययन	

पाठयक्रम समन्वयक: डॉ. मीतू दास, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

उप संपादन: डॉ. पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, इग्नू,नई दिल्ली

अनुवादक: श्री दिनेश गौतम, प्रोडक्शन मैनेजर, फोटोतंत्र, दिल्ली (इकाई 1 से 12 तक)
श्री दिवाकर दुबे, श्रम अधीक्षक, बिहार भवन, दिल्ली (इकाई 13)

कवर डिजाइन: डॉ. मीतू दास

कार्यक्रम समन्वयक: डॉ. रूखशाना जमान, सहायक प्रोफेसर, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

अकादमिक परामर्शदाता : डॉ. पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली
डॉ. स्मारिका अवस्थी शर्मा, अकादमिक परामर्शदाता, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुल सचिव (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

श्री हेमन्त परीदा
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
सा.नि. एवं वि. प्र. इग्नू, नई दिल्ली

अगस्त,, 2021

©इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021

ISBN-

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

मानविकी विद्यापीठ एवं इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के बारे में विश्वविद्यालय कार्यालय मैदान गढ़ी नई दिल्ली से अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, सामग्री निर्माण एवं वितरण प्रभाग, इग्नू द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

लेजर टाइप सेटिंग : टेसा मीडिया एण्ड कंम्प्यूटर्स, सी–206, शाहीन बाग, जामिया नगर, नई दिल्ली

मुद्रक :

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

विषय सूची

खंड 1	**अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का परिचय**	
इकाई 1	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास	**11**
इकाई 2	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अध्ययन के दृष्टिकोण	26
इकाई 3	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता	40
खंड 2	**अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-I**	59
इकाई 4	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं विकास	59
इकाई 5	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं बाज़ार	75
इकाई 6	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं स्वास्थ्य	94
इकाई 7	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं शरीर का मूल्यांकन	110
खंड 3	**अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-II**	123
इकाई 8	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं फोरेंसिक (न्यायिक) मानवविज्ञान	125
इकाई 9	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं मल्टीमीडिया	141
इकाई 10	अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं आपदा प्रबंधन	160
खंड 4	**अभ्यास में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग**	**179**
इकाई 11	उपकरण और तकनीक	181
इकाई 12	क्षमता विकास	195
इकाई 13	सिविल सोसायटी और राज्य में भागीदारी	210
सुझावित अध्ययन		**225**

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम परिचय

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान (एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी) सामाजिक सरोकारों को पहचानने, मूल्यांकन करने और उन्हें हल करने के लिए मानवशास्त्रीय डेटा, दृष्टिकोण, सिद्धांतों और विधियों के अनुप्रयोग से संबंधित है। इसका अर्थ यह है कि यह मानवविज्ञान का व्यावहारिक पहलू ही है जिसमें सिद्धांतों और विधियों का उपयोग लोगों और संस्थानों की समस्याओं और परिस्थितियों के लिए एक रास्ता प्रदान करके और उनकी जरूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। इसी कारण मानवविज्ञान का यह उपक्षेत्र आज के समय में काफी प्रासंगिक हो गया है और अब इसे मानवविज्ञान की मुख्य शाखाओं में से एक माना जाता है।

यह छह क्रेडिट का पाठ्यक्रम है। पाठ्यक्रम को चार खंडों (ब्लॉक) में बांटा गया है। पहला खंड शिक्षार्थी को एक संक्षिप्त ऐतिहासिक विवरण प्रदान करके और उसके अध्ययन के दृष्टिकोण और अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के अभ्यास में शामिल नैतिक चिंताओं को अनुप्रयुक्त विज्ञान से परिचित कराता है। दूसरे और तीसरे खंड व्यापक रूप से उन विभिन्न क्षेत्रों को सूचित करते हैं जिनमें लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए मानवविज्ञान को व्यावहारिक रूप से लागू किया जा सकता है और अंत में अंतिम खंड शिक्षार्थी को अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में उपयोग किए जाने वाले उपकरणों और तकनीकों के साथ संलग्न करने का प्रयास करता है कि क्षमता कैसे बनाई या विकसित की जा सकती है। वास्तविक परिवर्तन पैदा करने के लिए परिस्थितियों में कैसे काम करते हैं और कैसे मानवविज्ञानी नागरिक समाज और सरकार के सहयोग से मानव समाज की उन्नति के लिए ईमानदारी से रणनीति बना सकते हैं और इसपर काम कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम के परिणाम

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद, एक शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है वह:

- अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के अर्थ को परिभाषित करें;
- विभिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन करें जिनके माध्यम से विभिन्न परिदृश्यों में मानवविज्ञान को लागू किया जा सकता है;
- उन क्षेत्रों की पहचान कर सकेंगे जिनमें अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान रचनात्मक रूप से भाग ले सकता है; तथा
- सरकार और नागरिक समाजों के साथ काम करते हुए क्षमता निर्माण के साथ–साथ अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान में आवश्यक उपकरणों को पहचाने में सक्षम हो सकेंगे।

पाठ्यक्रम प्रस्तुति

पाठ्यक्रम को चार खंडों में बांटा गया है। प्रत्येक खंड में एक विषय है जो इकाइयों के रूप में परिलक्षित होता है। इस पाठ्यक्रम में कुल 13 इकाइयाँ हैं। नीचे हम आपको एक संक्षिप्त विवरण प्रदान कर रहे हैं कि प्रत्येक इकाई विषयगत खंडों में क्या शामिल करती है।

खंड 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का परिचय

जैसा कि नाम से पता चलता है, यह खंड इस बात का परिचय है कि अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान क्या है और यह क्या करता है। खंड को तीन इकाइयों में बांटा गया है। ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास*** शीर्षक वाली पहली इकाई आपको इस बात की विस्तृत व्याख्या प्रदान करेगी कि अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान क्या है, यह मानवविज्ञान में और भारत में एक विशेष शाखा के रूप में कैसे विकसित हुआ की समझ प्रदान करता है। साथ ही अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान में प्रशिक्षण के साथ, आप वास्तविक स्थानीय और वैश्विक चिंताओं का प्रबंधन करने के लिए कैसे सुसज्जित हो सकते हैं इस पर भी चर्चा की गई है।

दूसरी इकाई ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अध्ययन के दृष्टिकोण*** है। यह व्यवहारिक और पेशेवर मानवविज्ञानी के बीच अंतर करते हुए, शिक्षार्थी को उन दृष्टिकोणों की व्याख्या करेगा जो व्यवहारिक मानवविज्ञान के अध्ययन में उपलब्ध हैं, और यह इकाई यह भी बताती है कि दोनों विभिन्न परिदृश्यों में कैसे महत्वपूर्ण है और तदनुसार उनका उपयोग कैसे किया जाता है। यह इकाई आपको बताएगी कि कैसे अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी आज की वैश्वीकृत दुनिया में क्रियात्मक मानवविज्ञान या कॉर्पोरेट मानवविज्ञान में भाग ले सकते हैं और व्यावहारिक समाधान प्रदान कर सकते हैं। इस खंड की तीसरी और अंतिम इकाई ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता*** है जो यह चर्चा करेगी कि मानवविज्ञान के इतिहास में नैतिकता अपने अतीत के ठोस उदाहरणों के साथ कैसे विकसित हुई।

यह इकाई आपको इस बारे में सूचित करेगी कि अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का प्राथमिक लक्ष्य उन लोगों के हितों की रक्षा करना है, जिनका अध्ययन अनुप्रयुक्त(व्यवहारिक) मानवविज्ञानी करते हैं। इसमें सहायता करने के लिए, सोसाइटी फार एप्लाइड एंथ्रोपोलाजी जैसे संस्थागत निकायों ने अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी द्वारा पालन किए जाने वाले नैतिक मानदंड तैयार किए हैं जो आपकी बेहतर समझ के लिए इस इकाई में प्रदान किए गए हैं।

खंड 2 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-I

जैसा कि नाम से पता चलता है, यह खंड आपको उन विभिन्न क्षेत्रों में ले जाएगा जहां अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी अपनी उपस्थिति को महत्वपूर्ण बना सकते हैं। इस खंड में पहली इकाई इकाई 4 है, जिसे ***अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान और विकास*** कहा गया है। यह इकाई आपको विकास की परिभाषा प्रदान करने के अलावा यह बताएगी कि मानवविज्ञान विकास के विचार से कैसे जुड़ा है और अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी सतत विकास लक्ष्यों के महत्व को ध्यान में रखते हुए विकास के क्षेत्रों में कैसे काम करते हैं। इकाई 5 जो ***अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान और बाजार*** है, आपको विभिन्न प्रकार के बाजारों और मानवविज्ञानी बाजार को कैसे देखते हैं, से परिचित कराता है। इसके बाद बाजारों का अध्ययन करने में नैतिक रूप से और प्रभावी ढंग से उपयोग की जाने वाली मानवशास्त्रीय पद्धति का उपयोग किया गया है। इकाई 6 ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और स्वास्थ्य*** है। यह स्वास्थ्य की मानवशास्त्रीय धारणा का वर्णन करने के साथ–साथ आपको बताएगा कि कैसे व्यवहारिक मानवविज्ञानी सामान्य रूप से स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं का प्रबंधन करते हैं और विशेष रूप से भारत में स्वास्थ्य पर शोध में योगदान कैसे करते हैं। खंड की अंतिम इकाई 7 है, मानव शरीर को ध्यान में रखते हुए, ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और शरीर का मूल्यांकन*** मानवविज्ञान, डिजाइन मानवविज्ञान,

शरीरक्रिया मानवविज्ञान और किनेथ्रोपोमेट्री की अवधारणाओं से परिचय कराता है। आपको ऊपर बताए गई इन इकाईयों में प्रत्येक क्षेत्र की स्पष्ट झलक मिलेगी और आप देखेंगे कि दैनिक जीवन में व्यावहारिक समाधानों के लिए मानव विज्ञान खुद को किस तरह से नियोजित करता है।

खंड 3 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्र-II

यह खंड पिछले खंड की निरंतरता है जिसमें हम आपको और अधिक क्षेत्र प्रदान करते हैं जहां अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी लोगों को बेहतर समाधान प्रदान करने के लिए लगन से काम कर सकते हैं। इस खंड की पहली इकाई 8 है और इसका शीर्षक ***अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान और फोरेंसिक मानवविज्ञान*** है। इस इकाई में आप एक फोरेंसिक मानवविज्ञानी की भूमिकाओं और कार्यों के साथ–साथ यह परिभाषित करना सीखेंगे कि फोरेंसिक मानवविज्ञान क्या है। आपको व्यक्तियों की पहचान में उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली विधियों की पहचान करना और भारत में फोरेंसिक मानवविज्ञान की रूपरेखा के बारे में सिखाया जाएगा। अगली इकाई, इकाई 9 ***अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान और मल्टीमीडिया*** है। यह इकाई आपको बताएगी कि मानव विज्ञान के संदर्भ में मल्टीमीडिया को कैसे समझा और शोध किया जाता है। यह आपको मल्टीमीडिया के ढांचे के भीतर मानवविज्ञान और चिंतन के विशिष्ट सामाजिक और प्रासंगिक क्षेत्रों के बीच अनुसंधान के अंतःक्रियात्मक और अनुप्रयुक्त क्षेत्रों पर एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करेगा। इस खंड की अंतिम इकाई 10 ***अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान और आपदा प्रबंधन*** है। यह इकाई आपको इस बारे में सूचित करेगी कि मानवविज्ञानी आपदाओं को कैसे देखते हैं तथा इसके प्रबंधन में अपने ज्ञान और विशेषज्ञता को कैसे प्रदान करते हैं। इस प्रकार आपदा प्रबंधन में मानवविज्ञान के अनुप्रयोग में आपकी सहायता करेगा और आपदाओं के प्रबंधन में मानवविज्ञानियों की भागीदारी को सूचित करेगा।

खंड 4 : अभ्यास में व्यावहारिक ज्ञान का उपयोग

यह पाठ्यक्रम का अंतिम खंड है जिसकी पहली इकाई, इकाई 11 है। इसे ***उपकरण और तकनीक*** कहा गया है और यह इकाई अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी द्वारा अपने शोध में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न उपकरणों और तकनीकों पर चर्चा करती है। यह इकाई आपको अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अनुसंधान में उपयोग किए जाने वाले उपकरण और तकनीकों के साथ बुनियादी मानवशास्त्रीय अनुसंधान उपकरणों की भिन्नता और उपयोग पर प्रकाश डालती है। खंड की दूसरी इकाई, इकाई 12 है और इसे ***क्षमता विकास*** कहा गया है। विकास विमर्श के भीतर क्षमता विकास के पीछे के विचार का वर्णन करते हुए यह इकाई आपको क्षमता निर्माण और क्षमता विकास के बीच वैचारिक अंतर के बारे में जानने में मदद करेगी। इकाई क्षमता विकास से संबंधित कुछ जटिलताओं को पहचानने में भी मदद करेगी। यह पाठ्यक्रम और खंड की अंतिम इकाई 13 है जो ***सिविल सोसायटी और राज्य में भागीदारी*** है। नागरिक(सिविल) समाज और राज्य की अवधारणाओं के बारे में सीखने के अलावा, आप सीखेंगे कि मानवविज्ञानियों ने विकास और नीति निर्माण में कैसे योगदान दिया है। आप यह भी सीखेंगे कि आप स्वयं सिविल सोसाइटी और राज्य में मानवशास्त्रीय ज्ञान के साथ काम करने के कौशल को कैसे सुधार सकते हैं। यह इकाई आपको राज्य और समाज के बीच की खाई को पाटने के लिए मानव समाज पर समग्र शोध को समझने और शुरू करने में सहायता प्रदान करेगा।

पाठ्यक्रम के बारे में इस संक्षिप्त जानकारी के साथ, अब आप प्रत्येक पाठ को व्यापक तरीके से पढ़ने के लिए तैयार हैं। जैसा कि आप अध्ययन का बड़ा हिस्सा अपने दम पर कर रहे होंगे, पाठों को इस तरह से बनाया गया है जिससे आपको पाठ्यक्रम को समावेशी तरीके से समझने में मदद मिल सके। यह सलाह दी जाती है कि आप पाठ्यक्रम को क्रमिक रूप से पढ़ें ताकि स्पष्टता के सूत्र को न खोएं।

जैसा कि आप कक्षा में एक शिक्षक को विषयगत और कालानुक्रमिक तरीके से एक पाठ्यक्रम पढ़ाते हुए पाएंगे, उसी तरह आपको भी इकाई 1 से अपने पाठ्यक्रम का अध्ययन करने और इसे अंतिम इकाई के साथ समाप्त करने की आवश्यकता है, इस मामले में, इकाइयों को आगे 13 इकाईयों में विभाजित किया गया है जिसमें आपके पढ़ने और बेहतर समझ के लिए आसान अनुभाग और उप–अनुभाग बनाए गए हैं। प्रत्येक इकाई अधिगम (सीखने) के परिणामों के साथ है जो यह बताती है कि इकाई को पढ़ने के बाद आपसे क्या अपेक्षा की जाती है। इकाइयों में अपनी प्रगति जाँचें भी शामिल हैं ताकि आपको स्वयं को परखने में मदद मिल सके कि आपने जो पढ़ा है उसे सीख लिया है या नहीं। यह पाठ के बारे में जानने का एक अच्छा तरीका है और बाद में आपको अपनी सत्रांत परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी करने में मदद करेगा क्योंकि आप अपने उत्तरों को केवल अनुभागों से कॉपी और पेस्ट करने के बजाय अपने शब्दों में बनाना सीखेंगे। प्रत्येक इकाई में अंत में एक सारांश भी है जो आपको इस बारे में एक संक्षिप्त जानकारी देता है कि पाठ में क्या शामिल है। इकाइयाँ उन संदर्भों के साथ समाप्त होती हैं जो पाठ के माध्यम से उल्लिखित कार्यों का हवाला देते हैं और अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर प्रदान करते हैं। यह आपको यह जानने में सहायता करती है कि आपके प्रश्नों के उत्तर कहाँ रखे गए हैं। यद्यपि जिन अनुभागों से उत्तर मांगे जाते है उनमें आपसे अपेक्षा की जाती है कि आपको उत्तरों को अपने शब्दों में तैयार करने का प्रयास करना चाहिए जिससे इकाइयों के प्रति आपकी समझ में स्पष्टता आएगी।

आपके अध्ययन के लिए शुभकामनाएँ ! यह आशा की जाती है कि यह पाठ्यक्रम एक व्यावहारिक मानवविज्ञानी बनने की आपकी यात्रा में एक बुनियादी प्रारंभिक प्रशिक्षण प्रदान करेगा।

इकाई 1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास*

इकाई की रूपरेखा

1.0 परिचय

1.1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानः संकल्पना

1.2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का ऐतिहासिक विकास

1.3 भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

1.4 सारांश

1.5 संदर्भ

1.6 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगेः

- अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को परिभाषित करने में;
- अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विकास की व्याख्या करने में;
- भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का अभ्यास किस प्रकार किया जाता है, इस बात को स्पष्ट करने में; तथा
- एक अनुप्रयुक्त मानव विज्ञानी की विभिन्न भूमिकाओं की पहचान करने में।

1.0 परिचय

जब से रेने देकार्त ने सत्रहवीं शताब्दी में अपने प्रसिद्ध ग्रंथ *डिसकोर्स ऑन मेथड्स* में सिद्धान्त एवं अभ्यास के बीच भेद स्पष्ट किया है, तब से सभी विषय व्यापक आधार पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक स्वरूप में विभाजित हो गए हैं। किसी सिद्धान्त अथवा 'प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला को समझने के लिए वस्तुनिष्ठ ज्ञान की एक व्यवस्थित प्रणाली' अपने व्यवहारिक स्वरूपों के साथ निकटता से जुड़ी होती है। अर्थात वे एक दूसरे से पोषित होते हैं। जब एक सिद्धांत को इसके अनुप्रयोग द्वारा परिष्कृत किया जाता है तब वह संशोधित सिद्धांत इन द्वंद्वात्मक तरीके से व्यवहारिक(अनुप्रयुक्त) पहलुओं को और समृद्ध करता है। इस संबंध में मानवविज्ञान विषय भी कोई अपवाद नहीं है, अन्य विषयों की तरह इसके भी सैद्धांतिक और व्यवहारिक ज्ञान के पहलू हैं। कुछ विषयों जैसे भौतिकी अथवा मनोविज्ञान में, यह विभाजन निष्पक्ष रूप से इस अर्थ में चिन्हित किया है कि वहाँ पर विभिन्न विभाग एवं स्थान निश्चित किए गए हैं जहां पर ज्ञान का सृजन होता है और उसे व्यवहारिक बनाया जाता है।

उदाहरण के लिए, बहुत से विश्वविद्यालयों में अनुप्रयुक्त मनोविज्ञान अथवा अनुप्रयुक्त भू–विज्ञान जैसे विभाग होते हैं। इतनी स्पष्टता के साथ मानव विज्ञान के विषय में ऐसा नहीं किया गया है जहां पर सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक मानव विज्ञान में भेदों की

*योगदानकर्ता– प्रो.आर.पी. मित्रा, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

तुलना में समानताएं अधिक हैं और दोनों एक दूसरे में अंतर्निहित हैं। कुछ मानव विज्ञानी जैसे मार्गरेट मीड कहती हैं "सम्पूर्ण मानव विज्ञान व्यवहारिक है"(1975:13)। यह भारतीय मानव विज्ञान के विषय में और भी सटीक बैठता है। एक मानवविज्ञानी एकही समय पर संदर्भ के आधार पर व्यवहारिक मानवविज्ञानी भी हो सकता है और 'सैद्धांतिक मानव विज्ञानी' भी।जैसे-जैसे हम इस इकाई में आगे बढ़ेंगे, इसका कारण और अधिक स्पष्ट होता जाएगा। अब हम इस बात के साथ प्रारम्भ करते हैं कि अनुप्रयुक्त या व्यवहारिक(एप्लाइड)मानवविज्ञान है क्या।

1.1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानः संकल्पना

अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान को उस मानव विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका उपयोग समस्या का समाधान करने के लिए किया जाता है। यह उपयोग में लाया जा रहा मानव विज्ञान है। मालिनोवस्की, जो कि आधुनिक मानव विज्ञान के जनक थे, ने अपने लेख 'प्रैक्टिकल एंथ्रोपोलॉजी' (1929) की प्रस्तावना में लिखा कि सभी विज्ञान अपनी उपयोगिताओं के साथ अस्तित्त्व में आए तथा मानव विज्ञान के विषय में भी यही हुआ है। उन्होंने स्वदेशी(देशज) लोगों की स्थिति और औपनिवेशिक सरकार द्वारा उनके कुशल प्रशासन को समझने में मानवशास्त्रीय ज्ञान के अनुप्रयोग की पुरजोर वकालत की। उन्होंने इसे प्रायौगिक मानवविज्ञान के रूप में संदर्भित किया। प्रायौगिक मानव विज्ञान एक ऐसा विषय है जो सैद्धांतिक मानव विज्ञान एवं इसकी उपयोगिताओं के बीच एक सेतु का काम करता है। मानव वैज्ञानिक सामाजिक सम्बन्धों, व्यवहार अथवा सांस्कृतिक प्रणालियों को प्रभावित करते हुए इसके प्रभाव के अर्थ में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के बारे में बात करते रहे हैं।

1941 में, मार्गरेट मीड, इलियट स्मिथ एवं अन्य जिन्होने मिलकर सोसाइटी ऑफ अप्लाइड एंथ्रोपोलोजी की स्थापना की, जो कि अनुप्रयुक्त मानव विज्ञानियों की सर्वाधिक मान्यताप्राप्त व्यावसायिक संस्था है। इसने अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को निम्न रूप से परिभाषित कियाः

'मानव सम्बन्धों की वास्तविक अंतर्विषयी समस्याओं के समाधान के लिए वैज्ञानिक जांच के माध्यम से मानव वैज्ञानिक दृष्टिकोणों का प्रयोग'। अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की परिभाषा को एक विज्ञान के रूप में बल देती है जो निम्नलिखित बिंदुओं को इंगित करती हैः

अ) स्थानः उन्होंने अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को अंतर्विषयी टीम के एक भाग के रूप में पहचान की जहां पर मानव विज्ञानी दूसरे अन्य विषयों के विशेषज्ञों के साथ मिलकर काम करते हैं।

ब) केंद्रः उनके लिए अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान मानव सम्बन्धों को समझने और उनका विश्लेषण करने तथा कैसे यह किसी सामाजिक समस्या का समाधान करने में सहायक हो सकता है, से संबन्धित है।

चार्ल्स विंक ने, मानव विज्ञान के प्रारम्भिक शब्दकोशों में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को 'मानव वैज्ञानिक ज्ञान' के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान को निम्न रूप में परिभाषित कियाः

"वह समूह जिसके लिए मानव विज्ञानी काम कर रहा है, उस समूह की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मानव वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग करना। इसमें परामर्श देना, प्रशासन अथवा निर्देश देना सम्मिलित हो सकता हैं"। (1958:28)

जॉर्ज फॉर्स्टर ने, जो कि अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की प्रारम्भिक पुस्तकों में से एक के लेखक है, 1969 में इसे मानव विज्ञानियों की उन व्यावसायिक गतिविधियों के रूप में परिभाषित करते हैं जो कि प्राथमिक रूप से मानव व्यवहार में किसी सामाजिक, आर्थिक अथवा कोई तकनीकी समस्या का समाधान करने के लिए परिवर्तनों से जुड़ी हैं। फॉस्टर के लिए अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान मानव वैज्ञानिक सिद्धांतों की तुलना में समस्याओं के समाधान से अधिक जुड़ा है (1969:54)। उनके द्वारा दी गयी परिभाषा की अनेकों आलोचनाओं में से एक है इसका सीमित दायरा, जो अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान को मात्र 'परिवर्तन परिस्थिति' का ही अध्ययन करने तक सीमित रखता है।

वेन विलिगन, सर्वाधिक जाने–माने अनुप्रयुक्त मानव विज्ञानियों में से एक हैं जो सांस्कृतिक प्रणालियों पर पड़ने वाले प्रभाव के अर्थ में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को परिभाषित करते हैं। उनके अनुसार अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान "सम्बद्ध, शोध–आधारित, सहायक विधियों का एक मिश्रण है, जो किसी विशेष सांस्कृतिक प्रणालियों में आंकड़ों के प्रावधान, प्रत्यक्ष कार्रवाही, तथा/अथवा नीति के निर्माण के द्वारा परिवर्तन अथवा स्थिरता उत्पन्न करता है। यह प्रक्रिया समस्या, मानव विज्ञानी की भूमिका, प्रेरक मूल्य तथा कार्रवाही में भागीदारी के विस्तार के अर्थ में अनेकों रूप धारण कर सकती है" (2002:11)।

अपनी प्रगति जांचें

1) अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान को परिभाषित करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में परिवर्तन के विभिन्न केंद्र बिन्दु वाले क्षेत्र कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.2 अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान का ऐतिहासिक विकास

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का इतिहास और विकास एक अकादमिक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान के विकास से निकटता से जुड़ा हुआ है और अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अपने प्रारंभ से ही मुख्यधारा के मानवविज्ञान का एक भाग रहा है। एक विषय के रूप में

मानव विज्ञान का उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी में मानव क्रमिक–विकास को अपना केन्द्रीय चिंतन विषय चुनने से आरंभ हुआ (इंगोल्ड 1994:XIV)। 'प्रगतिशील क्रमिक–विकास सिद्धान्त' पहली व्यापक रूपावली थी जिसने मानव विज्ञान के एक अलग विषय के विकास को वैधता प्रदान की। इसका केन्द्रीय चिंतन विषय मानवजाति का जैविक एवं सांस्कृतिक क्रमिक–विकास का इतिहास था। उनके लिए समसामयिक पाश्चात्य सभ्यता प्रगतिशील परिवर्तन प्रक्रिया का अंतिम पड़ाव था जिसके दौरान सामाजिक व्यवस्थापन विभिन्न पड़ावों से गुज़रा। अफ्रीका, एशिया,ओशिनिया तथा दक्षिण एवं उत्तरी अमरीका के आदिवासी एवं मूल समुदायों को इन भूतपूर्व रूपों के प्रतिनिधि के रूप में देखा गया। इसलिए, उन्हे 'प्राचीन समाजों' एवं उनकी संस्कृति को 'प्राचीन संस्कृति' का नाम दिया गया। मानव विज्ञान का उद्देश्य मानवजाति का इतिहास एवं सामाजिक व्यवस्थापन के प्रारम्भिक रूपों के बारे में जानने के लिए उनका अध्ययन करना था। अतः मानव विज्ञान एक अन्वेषण के रूप में उसे समझने के लिए आरंभ हुआ, जिसे यूरोपियन–अमेरीकन विद्वानों ने 'अन्य संस्कृतियों' के रूप में संदर्भित किया था। भौतिक मानवविज्ञान मानव के क्रमिक–विकास के जैविक पहलू को समझने और पुरातात्त्विक मानवविज्ञान इन संस्कृतियों के प्रागैतिहासिक पहलू को समझने के लिए एक अन्वेषण था। हालांकि समसामयिक प्राचीन समुदायों, जैविक एवं सामग्री आधारित संस्कृति अवशेषों के अध्ययन द्वारा इतिहास की पुनर्रचना मानव विज्ञान के व्यापक अधिदेश थे, यह कबीलों एवं स्वदेशी समुदायों के मानव वैज्ञानिक लेखा–जोखा ही था जिसके कारण उन्हे मान्यता मिली एवं अन्य द्वारा सम्मान मिला। बार्नेट के अनुसार, अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों के दौरान संयुक्त राष्ट्र एवं इंग्लैंड में हुआ। प्रयोग का पहला क्षेत्र कबीलों पर अध्ययन तथा मानव वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि का उपयोग था जो 'कबीलों एवं स्वदेशी लोगों का प्रबंधन करने के लिए औपनिवेशिक प्रशासकों' द्वारा किया गया था। हम अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के इतिहास को चार विभिन्न चरणों में उन्हीं में अंतर्निहित उपविभाजनों के द्वारा विभाजित कर सकते हैं।

क) अनुप्रयुक्त नृजातिविज्ञान (एथनोलॉजी) अवस्था

यह ब्रिंटन नामक एक अमेरिकी मानवविज्ञानी थे, जिन्होंने पहली बार देशज समुदायों के प्रबंधन के लिए 1896 की शुरुआत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की बात की थी (फोस्टर 1969:198)। बहुधा अपनी भलाई को भी दांव पर लगाते हुए,देशज अमीरिंडियन लोगों के तीव्र आत्मसातकरण से इस बात का आभास किया गया कि उनकी सम्पूर्ण पहचान एवं उनके सांस्कृतिक विलोपन की अत्यंत संभावना थी। 1879 में, संयुक्त राज्य सरकार ने देशज अमीरिंडियन लोगों के मामलों का प्रबंधन करने के बारे में जानकारी एकत्रित करने के लिए *ब्यूरो ऑफ एथ्नोलोजी* की स्थापना की (बेन्नेट 1994:25)। इस ब्यूरो ने, संघीय सरकार को अमेरिकन जीवन शैली में क्रमिक ढंग से आत्मसात होने की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने और सुधार कार्य एवं परिवर्तन लाने का परामर्श देने के लिए मानव विज्ञानियों को सेवारत किया। मानव वैज्ञानिक ज्ञान की मांग इन समुदायों से तीव्रता के साथ विलिप्त होते रीति–रिवाजों, परम्पराओं एवं सामाजिक प्रथाओं के दस्तावेजीकरण के लिए भी बढ़ी (पूर्वोक्तः 27)। अतः अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की शुरुआत स्वदेशी क्षेत्रों में सार्वजनिक प्रशासन के एक साधन तथा इन समुदायों की विलुप्त हो रही सांस्कृतिक प्रथाओं के दस्तावेजीकरण करने के एक सहायक मानव विज्ञान के रूप में हुई। उन्नीसवीं के उत्तरार्ध एवं बीसवीं शताब्दी

के पूर्वार्ध में ब्यूरो ऑफ एथ्नोलोजी के जैसी ही भूमिका ब्रिटिश साम्राज्य के औपनिवेशिक कार्यालय ने भी निभाई थी।उपनिवेशी प्रशासन की सहायता के लिए अफ्रीका और एशिया के विभिन्न हिस्सों में जनजातियों के विशेषज्ञ के रूप में मानवविज्ञानी की सेवाएं ली गईं(पूर्वोक्तः27)। मूनी ने इस कालावधि को अनुप्रयुक्त नृजाति विज्ञान से संबोधित किया (फेरारो एवं अंद्रियत्ता 2014:55)। रैडक्लिफ–ब्राउन ने दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन विश्वविद्यालय में 'स्कूल ऑफ अफ्रीकन स्टडीज' की स्थापना की। स्कूल का प्राथमिक उद्देश्य स्वदेशी लोगों और श्वेत उपनिवेशवादियों के बीच संबंधों में सुधार करना था। मलिनोवस्की ने भी इस बात की वकालत की कि मानव विज्ञानियों को औपनिवेशिक प्रशासकों की कार्यकुशलता में सुधार लाने के लिए काम करना चाहिए। उन्होंने इसे प्रायौगिक मानव विज्ञान का नाम दिया जैसा कि ऊपर पहले ही उल्लेख किया जा चुका है (ओ'ड्रिसकोल 2009:14)।

ख) अनुप्रयुक्त नृजाति विज्ञान एवं उपनिवेशवाद

अब यह पूर्ण रूप से स्वीकृत है कि अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान को अपने प्रारम्भिक वर्षों में उपनिवेशी प्रशासकों द्वारा एक उपयोगी मदद के रूप में देखा जाता था, जो वहाँ के मूल निवासियों के प्रशासनिक प्रबंधन एवं नियंत्रण को सुविधाजनक बनाती थी। यह भारत के परिप्रेक्ष्य में भी समान रूप से लागू होता था। अपने प्रारम्भिक वर्षों में मानवशास्त्रीय ज्ञान एक महत्त्वपूर्ण घटक हुआ करता था, जिसे कुख्यात रूप से 'कल्चरल टेक्नालजी ऑफ रूल' के नाम से जाना जाता है(डिर्क 2001:9)। आपको यह समझना चाहिए कि उपनिवेशी क्षेत्र एवं प्रभुत्त्व मात्र उत्तम श्रेणी की सैन्य तकनीक द्वारा ही संभव नहीं हो पाये अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक हस्तक्षेपों तथा जोड़–तोड़ द्वारा भी यह संभव हो पाया जिसने उन्हे यहाँ की मूल आबादी पर राज करने एवं उनका शोषण करने में सक्षम बनाया। भारत में, उपनिवेशी सरकार द्वारा मानव विज्ञानियों की सेवाओं का उपयोग गणना,वर्गीकरण एवं जनगणना संचालनों के लिए किया गया। अपने समय के दो अत्यंत जाने–माने मानव विज्ञानी हेर्बेर्ट रिसले एवं जे. एच. हट्टन को क्रमशः 1901 एवं 1931 में भारत की जनगणना करने का नेतृत्त्व करने के लिए बुलाया गया (पूर्वोक्तः51)। इस सेवा के अलावा, मानव विज्ञानियों को उपनिवेशी प्रशासकों के प्रशिक्षण के लिए भी रखा जाता था (वान विलिजेन, 1993:25)। मानव विज्ञानियों ने उपनिवेशी सरकारों को आदिवासी क्षेत्रों में होने वाली बगावतों एवं विरोधों से निपटने के लिए भी परामर्श देने के काम किया।अनुप्रयुक्त नृवंशविज्ञान के बचाव में यह कहा जा सकता है कि मानवविज्ञानी और औपनिवेशिक सरकारों के बीच किसी भी प्रत्यक्ष सहयोग के कई उदाहरण नहीं थे। वहीं दूसरी ओर, मानव विज्ञान के उपयोग ने मानव विज्ञान को लोकप्रिय बना दिया। इसने आदिवादियों को प्राचीन लोग होने की अनुभूति में परिवर्तन लाने में तथा लोगों को 'उनकी श्रेष्ठता के रोब' के प्रति आकर्षित करने में सहायता प्रदान की। कालांतर में इसने उपनिवेशवाद को 'असभ्य को सभ्य बनाने' के लिए नैतिक तर्कसंगति को चुनौती दी।

ग) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं बहुविषयी आंदोलन

1929–30 के वर्ष को गंभीर आर्थिक मंदी,बाज़ारों के पतन होने,व्यवसायों के बंद होने, बेरोजगारी एवं लोगों की आर्थिक दुर्गति के लिए जाना जाता है। इस

कालावधि को आमतौर पर महा–आर्थिक मंदी के रूप में जाना जाता है। यह कालावधि व्यवसाय एवं उद्योग जगत में अधिक मानवतावादी दृष्टिकोण लेकर आई तथा इसने लोगों के द्वारा अनुभव किए जा रहे कष्टों एवं आर्थिक कठिनाइयों के प्रति अधिक संवेदनशीलता दिखाई। आर्थिक संकट उन तरीकों में परिवर्तन आने का कारण बना जिस तरीके से व्यवसाय एवं उद्योग अभी तक चल रहे थे। इसने औद्योगिक प्रबंधन में मानव सम्बन्धों पर ध्यान केन्द्रित करने का पक्ष रखा तथा उत्पादन के लिए आवश्यक अन्य प्रकृतिक संसाधनों की तुलना में मनुष्यों को अथिक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में पहचान दी। हालांकि, मानवविज्ञानियों द्वारा नृजातीय अध्ययनों के एक भाग के रूप में आदिवासियों के साथ मानव सम्बन्धों के मामले में निपटने की विशेषज्ञता ने मानव विज्ञानियों को नवीन विकास प्रक्रिया के साथ अपने आप को जोड़ने में समर्थ बनाया। उन्होंने इन नई चुनौतियों का भी दृढ़ता से समाधान किया और यह वास्तविक समस्याओं के साथ मानवविज्ञानी की भागीदारी की शुरुआत का प्रतीक है। 1930 के दशक में डब्लू. लोएड वार्नर, फ्रेड रिचर्डसन एवं इलियट चैपल जैसे मानव विज्ञानी हुए जिन्हे मानव सम्बन्धों एवं औद्योगिक प्रबंधन पर पहले से काम कर रहे बहुविषयी दलों में जोड़कर देखा जा सकता है।इलियट ने इस नवीन संलिप्तता को *इंजीनियरिंग एंथ्रोपोलोजी* का नाम दिया (बेनेट्ट 1996:27)। यह वह प्रारंभिक शुरुआत थी जो बाद में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में उभरी। यह महसूस किया जा रहा था कि समस्या का कोई एक कारण नहीं है। सामाजिक समस्याओं को हल करने के लिए बहु–विषयक दृष्टिकोण का की आवश्यकता बढ़ गई और अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान भी इस बहु–विषयक टीम का हिस्सा बन गया। यह वह सूत्र था जिसने आने वाले दिनों में बाद में परिवर्तन को अधिक सुविधाजनक बनाने और मानव कल्याण को बढ़ाने से संबंधित अनुशासन के रूप में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विकास का नेतृत्व किया (पूर्वोक्तः 39)।

घ)अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एवं समस्या उन्मुख शोधकार्य

यह कालावधि सरकार और अन्य एजेंसियों द्वारा पेश की गई समस्याओं को हल करने में मानवविज्ञानी की भागीदारी को चिह्नित करती है। खाद्य राशनिंग और भोजन विकल्पों के प्रभाव, राष्ट्रीय नैतिकता, जनमत सर्वेक्षण, शत्रु राष्ट्रों के नागरिकों के राष्ट्रीय चरित्र अध्ययन आदि सहित कई मुद्दों पर काम करने के लिए बड़ी संख्या में मानवविज्ञानी कार्यरत थे। 1946 में जापानियों के राष्ट्रीय चरित्र को दर्शाते हुए रूथ बेनेडिक्ट द्वारा किया गया प्रसिद्ध काम, *द क्रिसेंथेमम एंड द स्वोर्ड* प्रकाश में आया। मार्गरेट मीड जैसे कुछ प्रसिद्ध मानवविज्ञानी थे जिन्होंने राज्य को युद्ध से उत्पन्न सामाजिक संकटों से निपटने में मदद की। इसी समय के आसपास कृषि विभाग ने भी ग्रामीण विकास की समस्याओं पर काम करने के लिए मानवविज्ञानियों की सेवाओं का लाभ उठाया। वर्ष 1941 में सोसाइटी फॉर अप्लाइड एंथ्रोपोलोजी ने अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानियों के लिए एक औपचारिक व्यावसायिक संस्था की स्थापना की जिसकी शुरुआत संयुक्त राज्य ने एक कथित उद्देश्य 'मानव व्यवहार के सिद्धांतों के अध्ययन तथा समसामयिक मुद्दों एवं समस्याओं के लिए इन सिद्धांतों के उपयोग' के साथ की। यह वही अवस्था थी जिसमें अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की एक सुधारात्मक विज्ञान के रूप में पुष्टता के साथ स्थापना की (पूर्वोक्त, 29)।

च) उत्तर–औपनिवेशिक चरण या विकास चरण

द्वितीय विश्व युद्ध के अंत को उपनिवेशवाद के अंत तथा नए स्वतंत्र देशों के अस्तित्व में उभर कर आने के रूप में चिन्हित किया जाता है। राष्ट्र–निर्माण, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, आर्थिक वृद्धि के विकास और गरीबी को दूर करने तथा जीवन की गुणवत्ता में सुधार के साथ एक नई विश्व व्यवस्था अस्तित्व में आई। युद्ध–पूर्व युगीन मानव विज्ञान की पैतृक वैज्ञानिकता एवं राज्य केन्द्रित स्वरूप की आलोचना की गयी तथा एक अधिक मानव–केन्द्रित (बजाय समस्या–केन्द्रित) संलिप्त अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की आवश्यकता का अनुभव किया गया। जैसा कि सोलटैक्स ने प्रसिद्ध ढंग से कहा, मानव विज्ञानियों को मनुष्यों को केवल विषयवस्तु के रूप में नहीं देखना चाहिए, अपितु अपने अध्ययन के उद्देश्यों के रूप में भी देखना चाहिए(1964:251)।इस चरण में अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान में कई विकास हुए और क्षेत्र को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया गया। उदाहरण के लिए, सोल टैक्स ने एक्शन एंथ्रोपोलॉजी (क्रियात्मक मानवविज्ञान) शब्द गढ़ा। क्रियात्मक मानवविज्ञानी प्रत्यक्ष रूप से समुदाय के साथ मिलकर समुदाय की समस्याओं को सुलझाने तथा उनके जीवन स्तर को सुधारने का काम करते थे। सोल टैक्स का मानना था कि जो लोग सांस्थानिक प्रणाली के अंतर्गत काम कर रहे हैं, चाहे वह सरकारी हो अथवा गैर–सरकारी संस्थाएं, वह अपनी संस्थागत बाध्यताओं द्वारा अत्यधिक घिरी हुई हैं। इसके कारण मात्र विनियमित संलिप्तता ही संभव थी। उन्होंने मानवविज्ञानियों से अधिक प्रत्यक्ष कार्रवाही की वकालत की तथा इसे क्रियात्मक मानव विज्ञान का नाम दिया। इस चरण की एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी विकास के क्षेत्र में मानव विज्ञान का उपयोग। विकास के आर्थिक प्रतिमानों एवं आधुनिकीकरण सिद्धान्त की आलोचना के बाद, विकास का केंद्र मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सतत विकास की ओर बदल गया। विकास में गैर–मानव से मानवीय कारक के इस बदलाव ने विकास अध्ययन के क्षेत्र में मानवविज्ञानियों की भागीदारी को एक नए युग से जोड़ा। और वे योजना, क्रियान्वयन, मूल्यांकन से लेकर कार्यक्रम समीक्षा तक विकास के सभी पहलुओं से जुड़ गए। मानव विज्ञान की भूमिका इतनी अधिक अनिवार्य हो गयी कि कोई भी समुदाय आधारित विकास मानवविज्ञानियों की संलिप्तता के अभाव में सम्पूर्ण नहीं हो सकता था। इस चरण में सामाजिक समस्याओं एवं सामाजिक मुद्दों के साथ अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की प्रत्यक्ष संलिप्तता अधिक सक्रिय रूप में देखी गयी।

अपनी प्रगति जांचें

3) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में विकास के चार विभिन्न चरण क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4) औपनिवेशिक भारत में जनगणना का नेतृत्व करने वाले मानवविज्ञानी कौन थे?

.....

.....

.....

.....

.....

5) प्रसिद्ध पुस्तक *द क्रिसेंथेमम एंड द स्वोर्ड* किसने लिखी है?

.....

.....

.....

.....

.....

6) क्रियात्मक मानवविज्ञान की संक्षेप में चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

1.3 भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

क) एक औपनिवेशिक सहायक के रूप में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

भारत में मानव वैज्ञानिक शोधकार्य को एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बेंगाल के समय से देखा जा सकता है, जिसकी स्थापना प्राच्य विद्या विशारद एवं भारतविद जज सर विलियम जोन्स द्वारा समुदायों पर व्यवस्थित ढंग से नृजातीय अध्ययनों को करने के लिए की गयी। जैसा कि पहले उल्लेखित किया जा चुका है, भारत में मानवविज्ञान की शुरुआत एक औपनिवेशिक व्यवहारिक एथनोलॉजी के रूप में आदिवासियों एवं जातियों पर शोध करने एवं औपनिवेशिक सरकार के लिए जानकारी एकत्रित करके तथा उनके प्रशासन में सहायता प्रदान करने के लिए हुई। इनमें से अधिकांश कार्य यूरोपीय विद्वानों द्वारा किए गए थे जिनमें मिशनरी, प्रशासक, न्यायाधीश और सैन्य अधिकारी शामिल थे जो भारत में तैनात थे या जिनकी भारत में रुचि थी। इस काम के द्वारा प्राथमिक रूप से उन तथ्यों पर प्रकाश डाला गया जिनके माध्यम से प्रशासकों को संपत्ति की प्रणाली, भूमिधारण एवं इसके उत्तराधिकार को समझने में तथा उनके राजस्व संग्रहण को बढ़ाने में सहायता मिली (डिर्क 2001: 29)।हमने पहले देखा है कि कैसे उनके द्वारा किए अध्ययनों में लोगों में पायी जानेवाली विविधताओं,भेद, बाहरीपन,विभाजनों एवं वर्गीकरणों पर बल दिया ताकि बढ़ते राष्ट्रवाद को देशभर में फैलने से रोका जा

सके और बांटो और राज करो वाली औपनिवेशिक नीति को सुगम बनाया जा सके।

ख) भारतीय अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानः स्वाधीनता–पूर्व युग

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को सही अर्थ में शरत चन्द्र रॉय (1871–1942) को समर्पित किया जा सकता है, जो भारतीय मानवविज्ञान के जनक हैं (गुहा 2018:18)। रांची में अभ्यासरत एक वकील के रूप में, वह *मुंडा, हो* एवं *ओरांव* जनजातिकी दुर्दशा से बहुत अधिक प्रभावित हुए, जो भूमि से संबन्धित समस्याओं को लेकर न्यायालय में उपस्थित हुए थे। उनके साथ औपनिवेशिक अधिकारियों द्वारा घृणा एवं तिरस्कार के साथ बड़ा ही अमानवीय व्यवहार किया गया। एससी रॉय ने कानूनी मामलों में उनकी मदद करना शुरू कर दिया और अक्सर उनके और न्यायाधीशों के बीच संवाद स्थापित किया (पूर्वोक्त:18)। इनमे से अनेक आदिवासी जब कभी वह भूमि हस्तांतरण मामलों के लिए शहर में आए, उनके यहाँ ठहरे भी। एस. सी. रॉय का दृष्टिकोण लगभग सोलटैक्स के दृष्टिकोण के समान ही था, तथा उनकी ही तरह वे भी हस्तक्षेप एवं कानूनी मामलों में आदिवासियों की मदद करते थे। हालांकि एस. सी. रॉय मानव विज्ञान में औपचारिक रूप से प्रशिक्षित नहीं थे, परंतु श्रेष्ठ मानव विज्ञानियों के संपर्क में थे जैसे कि उनके समय के जेम्स फ्रेज़र ए डबल्यू.एच.आर, रिवेर्स तथा बाद में उन्होने रांची एवं कोलकाता विश्वविद्यालयों में व्याख्यान भी दिये। 1921 में उन्होने पहली औपचारिक मानव वैज्ञानिक पत्रिका *मैन इन इंडिया* की शुरुआत की (पूर्वोक्त 20)।

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में अधिक प्रत्यक्ष रूप से योगदान तारक चन्द्र दास (1898–1964), ने दिया, जो कि एक प्रशिक्षित इतिहासकार थे, उन्होने कलकत्ता विश्वविद्यालय में मानव विज्ञान पढ़ाया भी। उन्होंने 1941 की इंडियन साइन्स काँग्रेस में मानव वैज्ञानिक अधिवेशन के अध्यक्षीय सम्बोधन में इस विषय के बारे में बात की कि कैसे सांस्कृतिक मानवविज्ञान व्यक्ति एवं राष्ट्र की सेवा में उपयोगी हो सकता है। उन्होंने इस बारे में बात की कि कैसे सांस्कृतिक मानवविज्ञान का ज्ञान शिक्षा, व्यापार, कानूनी अध्ययनों, कृषि एवं प्रशासन के लिए महत्त्वपूर्ण है(गुहा 2011:260)। सांस्कृतिक कारक एवं उन्हे समझने के लिए किसी मानव विज्ञानी की विशेषज्ञता किस प्रकार महत्त्वपूर्ण हैं जैसे विचारों पर बल देते हुए वह अपने समय काफी आगे की सोच रखते थे।सामाजिक समस्याओं की आनुभविक समझ रखने पर बल देने वाली उनकी सोच का प्रतिबिंब उनके अग्रणी काम के द्वारा 1940 के बंगाल के अकाल के दौरान तथा बंगाल प्रदेश की शहरी एवं ग्रामीण आबादी पर इसके प्रभाव के रूप में सर्वोत्तम ढंग से देखा गया। उन्होने 1943 में अपने विद्यार्थियों एवं अन्य कर्मचारियों के साथ मिलकर अकाल के कारणों एवं बेसहारा शहरी एवं ग्रामीण आबादी पर पड़ने वाले प्रभाव को समझने के लिए वंशावली, केस अध्ययन, प्रश्नावलियों एवं साक्षात्कार आधारित परंपरागत नृजातीय विधियों का उपयोग करवास्तविक नृजातीय क्षेत्रीयकार्य का निष्पादन किया। यह रिपोर्ट अस्थायी सरकार को सौंपी गयी तथा इसके द्वारा की गयी अनेक सिफ़ारिशों को उस आयोग द्वारा अपना लिया गया जो अकाल के बारे में तथा भविष्य में उनसे बचने के उपायों के बारे में जांच–पड़ताल कर रहा था। उनका सम्पूर्ण लेख *बेंगाल फमाइन* में 1949 में प्रकाशित हुए था, जिसे कलकत्ता

विश्वविद्यालय ने प्रकाशित किया था। इस पुस्तक में उपलब्ध आंकड़ों को कालांतर में अमर्त्य सेन, जो कि एक प्रसिद्ध अर्थशास्त्री हैं,द्वारा अपने महत्त्वपूर्ण अध्ययन *पोवेर्टी एंड फमाइन* में उपयोग किया था (पूर्वोक्त 251)। यह काम भारत में मानवविज्ञान के नीति निहितार्थ एवं भविष्य के अर्थ में उदाहरणात्मक था।

ग) स्वातंत्र्योत्तर युग में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

यह स्वातंत्र्योत्तर युग ही था जिसमें व्यवहारिक मानवविज्ञान ने समाज में हाशिये पर रहने वाले वर्गों के विकास लक्ष्यों को आगे बढ़ाते हुए राष्ट्र निर्माण में योगदान देने वाले एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में उभर कर आया।इसका केंद्र बिन्दु आदिवासी एवं ग्रामीण विकास था। अंग्रेजों ने आदिवासी समुदायों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए एकांत या अलगाव नीति का अनुसरण किया। अंग्रेज़ी–राज के विरुद्ध 1857 के विद्रोह ने भारतीय जनता के बड़े वर्ग के प्रति औपनिवेशिक सरकार को सतर्क एवं शंकाकुल बना दिया। वह नहीं चाहते थे कि राष्ट्रवाद की उमड़ती लहर आदिवासी समुदायों को अपने साथ बहा ले जाए और साथ ही वह आदिवासी क्षेत्रों से निरंतर प्रकृतिक संसाधनों का निस्सारण एवं शोषण भी करना चाहते थे। इन दोनों बातों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने आदिवासी समुदायों के प्रति एकांत एवं निषिद्धता के माध्यम से संरक्षण देने वाली एक नीति का सृजन किया।स्वतन्त्रता मिलने के साथ ही एकांत की यह नीति अनुपयोगी सिद्ध हुई तथा आदिवासियों के हित में भी नहीं थी। आदिवासी लोग भारतीय सभ्यता का एक अभिन्न अंग थे तथा राष्ट्रीय निर्माण में उन्हे सम्मिलित किया जाना था। इस उद्देश्य के साथ भारतीय सरकार ने संस्कृति एवं लोगों की पहचान को बचाए रखने के लिए विकास एवं सुरक्षा उपायों द्वारा संरक्षणवाद के माध्यम से दोहरे दृष्टिकोण की परिकल्पना की। अतः अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान ने इस दृष्टिकोण के अंतर्गत एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

घ) अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान एवं सरकारी संस्थाएं

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से ही मानव वैज्ञानिक सरकार को जनगणना, विविधता एवं भारतीय लोगों के वर्गीकरण से संबन्धित मुद्दों के बारे में परामर्श दे रहे थे। जैसा कि पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि हर्बर्ट रिसले एवं जे. एच. हट्टन दोनों ही प्रशिक्षित मानव विज्ञानियों ने क्रमशः 1901 एवं 1931 की जनगणना का नेतृत्त्व किया, जिसने भारत के लोगों के प्रशासनिक वर्गीकरण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन के अंत में उन्होंने 1945 में भारत के भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण की स्थापना की, जिसके पहले निदेशक के रूप में बी.एस गुहा और आदिवासी मामलों पर सरकार को सलाह देने के लिए वेरियर एल्विन इसके उप निदेशक थे। स्वतंत्रता के बाद के युग में संगठन ने जनजातीय मुद्दों के साथ–साथ भारतीय आबादी की जैव–सांस्कृतिक विविधता से संबंधित अन्य मामलों पर सरकार को सलाह देने में एक प्रमुख भूमिका निभाई। वर्तमान में यह एकल सरकारी सबसे बड़ी मानव वैज्ञानिक संस्था है, जिसके आठ प्रादेशिक केंद्र देश के विभिन्न भागों में अवस्थित हैं। आदिवासी आधारित अध्ययनों को करने के लिए एंथ्रोपोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अलावा राज्य स्तर पर आदिवासी अनुसंधान संस्थानों के नेटवर्क भी हैं। इनकी स्थापना 1953 में प्रथम पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत आदिवासी समुदायों के बारे में जानकारियों के अभाव को कम करने तथा इस जानकारी को नीति निर्माण करने वालों तक पहुँचाने के

लिए की गयी थी। वर्तमान में भारत में विभिन्न राज्यों में आदिवासी संस्कृतियों एवं त्यौहारों को बढ़ावा देने के लिए गतिविधियां, कार्यक्रम इत्यादि का निष्पादन करने के लिए 25 केंद्र उपलब्ध हैं।वह आदिवासी क्षेत्रों में नियुक्त किए गए सरकारी कर्मचारियों के लिए संवेदीकरण कार्यक्रमों का भी आयोजन करते रहते हैं। वे जनजातीय क्षेत्रों में तैनात सरकारी अधिकारियों के लिए संवेदीकरण कार्यक्रम भी चलाते हैं। मानवविज्ञानी अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति आयोगों, रजिस्ट्रार जनरल और जनगणना आयुक्त के कार्यालय, संस्कृति मंत्रालय आदि सहित कई अन्य सरकारी निकायों से भी जुड़े हुए हैं। इसके अतरिक्त मानवविज्ञानी सार्वजनिक स्वास्थ्य के मुद्दों पर शोध करने के लिए भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान जैसे स्वास्थ्य अनुसंधान संगठनों से भी जुड़े हुए हैं।

च) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान तथा योजनबद्ध परिवर्तन एवं ग्रामीण विकास

इस मामले में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान श्यामा चरण दुबे (1922–1996) का रहा। एस. सी. दुबे अपने समय के मुख्य मानवविज्ञानी थे तथा प्रशासन के साथ साथ शिक्षा में भी महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। उन्होने सामुदायिक विकास कार्यक्रम का नेतृत्त्व किया, जिसकी शुरुआत 1952 में प्रथम पंचवर्षीय योजना के एक भाग के रूप में हुई, जिसे भारतीय योजना आयोग ने एक कार्यक्रम के रूप में शुरू किया।उन्होंने सामुदायिक विकास कार्यक्रम का नेतृत्व किया, जिसे 1952 में पहली पंचवर्षीय योजना के एक भाग के रूप में शुरू किया गया था, जिसे भारत के योजना आयोग ने एक कार्यक्रम के रूप में शुरू किया था और इसे सामुदायिक विकास कार्यक्रम के रूप में नामित किया था ताकि ग्रामीण परिवर्तन और भागीदारी के माध्यम से भारत में बेहतर जीवन का विकास हो सके और नियोजित परिवर्तन लाया जा सके। ए. आर. देसाई के अनुसार यह कार्यक्रम इस अर्थ में भिन्न था कि यह "परोपकारी भाव से दूर हटते हुए, इसने ग्रामीणों में एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन पैदा करने के लिए.... सामुदायिक विकास आंदोलन को लक्षित किया.....उनमें नयी अभिलाषाएं,नये प्रोत्साहन, नयी तकनीकें तथा एक नया आत्मविश्वास पैदा हुआ ताकि मानव संसाधन के इस विशाल भंडार को राष्ट्र के उन्नत हो रहे आर्थिक विकास के लिए उपयोगी बनाया जा सके" (देसाई 1953: 53)। एस.सी. दुबे ने सामाजिक समस्याओं को हल करने में सहयोगी अनुप्रयुक्त अनुसंधान का बीड़ा उठाया। उन्होंने विकास में मानव संसाधन की भूमिका को उजागर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

छ) भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की भूमिका में विस्तार

भारत में व्यवहारिक मानवविज्ञान की भूमिका में सदैव विस्तार ही होता रहा है। जैसा कि वैन विलिजेन (2002:13) ने पहचान की है, भारत में व्यवहारिक मानव विज्ञानियों का निम्नलिखित उपयोग के तीन क्षेत्रों में सफलतापूर्वक योगदान रहा है। वह हैं:

जानकारी के स्तर पर: यह अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की परंपरागत भूमिका रही। व्यक्तिनिष्ठ, सहभागी, बहुव्रीहि तथा कर्मकर्ता आधारित समझ पर बल देते हुए मानवविज्ञानी किसी भी विषय पर गुणवत्तापूर्ण जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए सर्वाधिक निपुण रहे। वह प्रायोजक संस्थाओं के स्थानीय संकल्पनाओं को

परिवर्तित करने में भी अत्यधिक सफल रहे हैं ताकि वह उनके महत्त्व को समझने में समर्थ हों। वह भागीदारी आधारित मूल्यांकन अध्ययनों, आवश्यकता मूल्यांकन एवं मूल्यांकन में भी दक्ष होते हैं, जिसके कारण नीति निर्माण करने वालों को महत्त्वपूर्ण प्रतिपुष्टियाँ उपलब्ध हो पायी हैं।

नीति निर्माण के स्तर पर:नीति निर्माण में मानवशास्त्रीय विशेषज्ञता के अनुप्रयोग और नीति विज्ञान के रूप में मानवविज्ञान ने 1990 के दशक से तेजी से प्रगति की है। इसके बाद की अवधि में नीति–निर्माण के क्षेत्र में तेजी से बदलाव देखा गया जिसमें वैश्वीकरण, सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दे नीति विज्ञान पर हावी हो गए। जिसके कारण सतत विकास में समानता और न्याय के मुद्दे, संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम तथा वैश्विक और स्थानीय ताकतों की गतिशीलता के सभी पहलुओं पर प्रभाव पड़ा। इस बदलते डोमेन के नीति निर्माण में मानवविज्ञानी की भूमिका और महत्वपूर्ण हो गई है और कई मानवविज्ञानियों ने भारत में नीतियों को आकार देने वाले थिंक टैंक के साथ काम करना शुरू कर दिया।

क्रियात्मक स्तर पर:व्यवहारिक मानवविज्ञानी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के स्तर पर भी अत्यधिक सक्रिय रहे हैं। कार्यक्रमों के निष्पादन में मानव विज्ञानियों की भूमिका बढ़ते क्रम में रही है। वह स्थानीय लोगों के साथ वकालती समूहों के रूप में भी सहयोग करते रहे हैं। लोगों के साथ काम करते हुए इनमें से अनेक स्वयं–सहायता समूहों के प्रशिक्षण से जुड़े हुए हैं।

पिछले कुछ दशकों में व्यवहारिक मानवविज्ञानी अध्ययनों के नवीन क्षेत्रों में आ पहुंचे हैं जैसे जटिल संस्थाओं के प्रबंधन एवं अध्ययन में जैसे कि सार्वजनिक क्षेत्र, अस्पताल, इत्यादि। इस संदर्भ में 1968 में एन. आर. शेठ द्वारा किए गए कार्य *सोशल फ्रमेवर्क ऑफ इंडियन इंडस्ट्री* तथा डी. पी. सिन्हा द्वारा किए गए कार्य *कल्चर चेंज इन एन इंटर–ट्राइबल मार्केट* द्वारा दर्शनीय योगदान दिया गया था, जो कि व्यवहारिक मानवविज्ञानक्षेत्र कें कुछ प्रारम्भिक कामों में से एक हैं। डी. पी. सिन्हा शहरी मानवविज्ञान क्षेत्र के प्रणेता थे तथा कलकत्ता शहर पर आधारित उनका लेख शहरी क्षेत्रों एवं शहर में रहने वालों की समस्याओं के अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान पर अग्रणी आलेखों में से एक है(सरन 1976:221)।

वर्तमान परिदृश्य

अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान समसामयिक भारत में रोजगार की नयी संभावनाओं के साथ एक जीवंत विषय है। अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी उन सभी भूमिकाओं में संलिप्त हैं जिनकी परिकल्पना वान विलिगन ने की थी(1993:7)। वह नीति शोधकर्ता, मूल्यांकनकर्ता, प्रभाव आंकलनकर्ता, योजनाकार, शोध विश्लेषक, वकालत प्रशिक्षक, एडवोकेसी ट्रेनर (वकालत प्रशिक्षक) सांस्कृतिक समन्वयक, प्रशासक, परिवर्तनप्रतिनिधि एवं चिकित्सक की भूमिकाओं में कार्यरत हैं। यदि पिछली शताब्दी में मानवविज्ञान विचित्र वस्तुओं का अध्ययन था, तो इस शताब्दी में शहरी समस्याओं जैसे प्रदूषण, गरीबी, आपदा प्रबंधन, सतत विकास, जीवनशैली आधारित बीमारियाँ, सार्वजनिक स्वास्थ्य मुद्दे, पारिस्थितिक पतन, कृषिक्षेत्र की परेशानियाँ,व्यवसाय एवं उद्योग के सीमावर्ती मुद्दों में मानव विज्ञान की संलिप्तता बढ़ेगी तथा इन क्षेत्रों तथा अन्य में अपनी उपस्थिती का अनुभव करवाएगी।

7) भारत में अपनी शुरुआत से लेकर वर्तमान समय तक अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की भूमिका की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

8) भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के उपयोग के तीन क्षेत्र कौन से हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

9) सामुदायिक विकास कार्यक्रम का नेतृत्व करने वाले मानवविज्ञानी का नाम बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

10) भारत में व्यवहारिक (अनुप्रयुक्त) मानवविज्ञानी किन व्यवसायों से जुड़े हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 सारांश

यह इकाई आपकी उस यात्रा की शुरुआत भर है जो अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान की दुनिया की आवश्यकता पर बल देती है। यह हमें अनुप्रयुक्त मानव विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों के प्रति बेहतर समझ बनाने के लिए तैयार करती है तथा यह बताती है कि कैसे मानवविज्ञानी अपने प्रशिक्षण के आधार पर वास्तविक स्थानीय एवं वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए तैयार होते हैं। इकाई आपको अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विकास की एक ऐतिहासिक रूपरेखा तथा इसके विभिन्न दशकों से गुजरते हुए लोगों की

समस्याओं को हल करने की विशेषज्ञता और भारत में एक ठोस क्षेत्र के रूप में इसके उद्भव को समझाती है।

1.5 संदर्भ

Bennet, J. W. (1996). "Applied and Action Anthropology: Ideological and Conceptual Aspects". *Current anthropology*.Volume 36, February, Supplemantry. pp. 23-54 .

Desai A.R. (1958). "Community Development Projects—A Sociological Analysis".*Sociological Bulletin*, Vol. 7, No.2 , pp. 152-16. Sage Publications, https://www.jstor.org/stable/42864541Accessed: 12-04-2020 12:35 UTC.

Ferraro G. and SussanAndreatta. (2014). *Cultural Anthropology: An Applied Perspective* .Stamford: Cengage Learning .

Foster, George M. (1969). *Applied Anthropology*. Boston: Little Brown.

Guha,Abhijit. (2018). *In search of nationalist trends in Indian anthropology: Opening a new discourse*. Occasional Paper62.Institute of Development Studies, Kolkata.

Ingold, Tim. (1994). "General Introduction".*Companion Encyclopedia of Anthropology*.Edited by Tim Ingold. London: Routledge.

Mead Margaret. (I975). "Discussion" in *Anthropology and society*.Edited by Bela C. Maday, Washington, D.C.: Anthropological Society of Washington.

Mitra, R.P. (2011). "On the Practice of Anthropology".In *Anthropology in India*.Edited by Saxena.H.S., Vinay K. Srivatava et al. New Delhi: Serial Publication pp 128-146.

Nollan, R.W.N. (2018). "Applied Anthropology".*The International Encyclopedia of Anthropology*.Edited by Hilary Callan. NewYork: JohnWiley& Sons, Ltd.

Pink, S. (2006)."Application of Anthropology". In S. Pink S. (ed.)*Application of Anthropology as Professional Anthropology in the Twenty-First Century* New York: Berghahn Books.

O'Driscoll, Emma. (2009). "Applying the 'UncomfortableScience': The Role ofAnthropology in Development". *Durham Anthropology Journal.*Volume 16(1) 13-21.

Saran G. (1976)."Status of Socia Culturalanthropology in India". *Annual Review of Anthropology* pp 209-225.

Sinha, D. P. (1968).*Culture Change in an Inter-tribal Market* . Bombay:Asia Publication.

Sheth , N . R. (1968).*The Social Framework of an Indian Factory*.Bombay: Oxford University Press.

Tax, Sol. (I964)."The uses of anthropology," in *Horizons of Anthropology*.Edited by Sol Tax, pp. 248-58. Chicago: Aldine.

Van Willigen, John. (2002). *Applied Anthropology: An Introduction*. Westport: Bergin & Garvey.

1.6 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1) अनुभाग1.1देखें।

2) अनुभाग1.1देखें।

3) अनुभाग1.2देखें।

4) अनुभाग 1.2 में पैराग्राफ 3 देखें।

5) अनुभाग 1.2में पैराग्राफ 5 देखें।

6) अनुभाग 1.2में पैराग्राफ 6 देखें।

7) अनुभाग1.3देखें।

8) अनुभाग 1.3में बिन्दु **छ)**को देखें।

9) एस. सी. दुबे

10) भारतीय मानवविज्ञानी विभिन्न रूप सेनीति शोधकर्ता, मूल्यांकनकर्ता, प्रभाव आंकलनकर्ता, योजनाकार, शोध विश्लेषक, एडवोकेसी ट्रेनर (वकालत प्रशिक्षक), सांस्कृतिक समन्वयक, प्रशासक, परिवर्तन प्रतिनिधि एवं चिकित्सक की भूमिकाओं में कार्यरत हैं।

इकाई 2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अध्ययन के दृष्टिकोण*

इकाई की रूपरेखा

2.0 परिचय

2.1 अनुप्रयुक्त मानवशास्त्रीय ज्ञान के दृष्टिकोण

2.2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में विविधताएँ

2.3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में दृष्टिकोण

2.4 उप–विषयी व्यावहारिक विशेषज्ञताएं

2.5 क्रिया दृष्टिकोण/क्रियात्मक मानवविज्ञान

2.6 पेशेवर मानवविज्ञानी एवं व्यावहारिक मानवविज्ञानी

2.7 सहभागी दृष्टिकोण

2.8 लोक–नीतिविज्ञान के रूप में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

2.9 व्यापारिक एवं निगमित मानवविज्ञान में अनुप्रयुक्त मानवशास्त्र

2.10 सारांश

2.11 संदर्भ

2.12 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगे:

- अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में दृष्टिकोण का वर्णन करने में;तथा
- विभिन्न क्षेत्रों में इन दृष्टिकोणों का उपयोग करने में।

2.0 परिचय

इस इकाई में हम व्यावहारिक मानवविज्ञान में प्रयुक्त दृष्टिकोणों का अध्ययन करेंगे। दृष्टिकोण से तात्पर्य उस संदर्भ, तंत्र अथवा परिप्रेक्ष्य से है जिसमें हम किसी क्रिया का निष्पादन करते हैं। श्रम के किसी भी अनुशासनात्मक विभाजन को मोटे तौर पर अपने ज्ञान और प्रयोजन की खोज के रूप में देखा जा सकता है। हम पूर्व को मूल या शुद्ध शोध के रूप में संदर्भित करते हैं और बाद वाले को अनुप्रयुक्त के रूप में। इस प्रकार जब हम एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी शब्द का उपयोग करते हैं तो इसका तात्पर्य 'वास्तविक दुनिया की समस्याओं' को हल करने के लिए मानवशास्त्रीय ज्ञान के उपयोग से है (नोलन 2018)। एक शुद्ध शोधकार्य किसी वास्तविक समस्या को संबोधित कर भी सकता है और नहीं भी। यह अपने आप को किसी सैद्धांतिक मुद्दे से जोड़ सकता है अथवा ज्ञान की उत्पत्ति के संबन्धित हो सकता है, जबकि व्यावहारिक भाग किसी विशेष मुद्दे को संबोधित करने के उपयोग से संबन्धित हो सकता है। हम कह सकते हैं

***योगदानकर्ता**– प्रो.आर.पी. मित्रा, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

कि कोई सिद्धान्त प्रश्न एवं उत्तर, दोनों ही प्रस्तुत करता है, जबकि व्यावहारिक पहलुओं का केंद्र बिन्दु प्राथमिक रूप से उत्तर प्रदान करना होता है।

2.1 अनुप्रयुक्त मानवशास्त्रीय ज्ञान के दृष्टिकोण

मानव वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग में *ऑफ एंथ्रोपोलाजिकल* एवं *फॉर एंथ्रोपोलाजिकल* के बीच बहुधा एक भेद प्रस्तुत किया जाता है। जब हम *ऑफ एंथ्रोपोलाजिकल* संज्ञा का उपयोग करते हैं तो उसका तात्पर्य किसी मुद्दे की अधिक गंभीर मानव वैज्ञानिक संकल्पनात्मक समझ से होता है, जबकि *फॉर एंथ्रोपोलाजिकल* संज्ञा का तात्पर्य सामने आई हुई समस्या की ओर निर्देशित मानव वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के उपयोग अथवा व्यावहारिकता से है। जबकि अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान प्राथमिक रूप से किसी मुद्दे के *फॉर एंथ्रोपोलाजिकल* पहलुओं से संबन्धित है, शुद्ध मानवविज्ञान अधिकतर *ऑफ एंथ्रोपोलाजिकल* पहलुओं से संबन्धित है। जब हम स्वास्थ्य मानवविज्ञान कहते हैं तो यह अंतर–सांस्कृतिक स्वास्थ्य की संकल्पना से संबन्धित मुद्दों के साथ संबन्धित होता है तथा स्वास्थ्य के गैर–भौतिक तत्त्वों जैसे सामाजिक, सांस्कृतिक, भावनात्मक तथा आध्यात्मिक निर्धारण में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जबकि *स्वास्थ्य के लिए मानवविज्ञान* संज्ञा का संबंध किसी विशिष्ट संदर्भ में किसी स्वास्थ्य संबन्धित समस्या को संबोधित करने के लिए मानव वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग से है उदाहरण के लिए यदि किसी आदिवासी क्षेत्र में प्रतिरक्षण कार्यक्रम में लोगों की उपस्थिति में कमी दर्ज होती है, तो लोगों के साथ बेहतर सम्मति के लिए मानव विज्ञानियों की सेवाओं का लाभ उठाया जा सकता है।

अपनी प्रगति जांचें

1. मानवशास्त्रीय ज्ञान को लागू करने के दो तरीके क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.2 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में विविधताएँ

व्यावहारिक या अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में विभिन्न दृष्टिकोणों का सटीकता के साथ निर्धारण इस बात से होता है कि व्यावहारिक मानवविज्ञानी करते क्या हैं। हमें याद रखना होगा कि जब हम व्यावहारिक मानवविज्ञान की संज्ञा का उपयोग करते हैं, सामाजिक मानवविज्ञान के साथ-साथ, इसमें अनुप्रयुक्त पुरातत्त्व–विज्ञान एवं अनुप्रयुक्त जैविक मानवविज्ञान भी सम्मिलित होते हैं। अनुप्रयुक्त भौतिक अथवा जैविक मानवविज्ञान का फोरेंसिक विज्ञान, चिकित्सकीय संस्थानों, अस्पतालों एवं वस्त्रों के श्रमदक्षता शास्त्र(एर्गोनॉमिक्स), जूते–चप्पलों, कार डिज़ाइन करने एवं अन्य उद्योगों में व्यावहारिक शोधकार्य का एक लंबा इतिहास रहा है। अनुप्रयुक्त पुरातत्त्व विज्ञान की उत्पत्ति सर्वाधिक आधुनिक है तथा अधिकांशतः यह आदिवासी सांस्कृतिक विरासतों एवं स्थानीय महत्त्व वाले स्मारकों के संरक्षण के साथ संबन्धित है।

एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी (अनुप्रयुक्त) शब्द में विविध गतिविधियाँ शामिल हैं और अक्सर पेशेवर अपनी विशेषज्ञता के संदर्भ में विभिन्न शब्दों का उपयोग करते हैं। अनुप्रयोग होने वाले अन्य शब्दों के साथ–साथ एक्शन(क्रियात्मक), प्रैक्टसिंग(व्यवसायिक), इंगेज(संलग्न), पक्षधरिता(एडवोकेसी) और सार्वजनिक पेशेवर अभ्यास मानवविज्ञानियों द्वारा स्वयं के वर्णन के लिए विभिन्न उपसर्गो का उपयोग किया जाता है। उन सभी को अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के प्रकारों के रूप में समझा जा सकता है, जो अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के विकास के विभिन्न चरणों के दौरान उभर कर आई। शैक्षणिक मानवविज्ञान के भीतर ही उप–विषयी विशेषज्ञता के साथ पारिस्थितिक मानवविज्ञान , विकासात्मक मानवविज्ञान, अदालती (फोरेंसिक)मानवविज्ञान , शारीरिक मानवविज्ञान , शहरी मानवविज्ञान , चिकित्सकीय मानवविज्ञान , आणविक मानवविज्ञान जैसे विषय हैं, जिन सभी के शक्तिशाली व्यावहारिक पहलू हैं।

भारत में भी मानवविज्ञानियों ने विविध क्षेत्रों जैसे स्वदेशी ज्ञान, नीति अध्ययन, कृषि, ग्रामीण और आदिवासी विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, कार्यक्रम मूल्यांकन, योजना, कार्यान्वयन, आपदा, फोरेंसिक, मानव–पशु संघर्ष, मानसिक स्वास्थ्य, शहरी समस्याओं के साथ–साथ कई अन्य महत्वपूर्ण समकालीन मुद्दो पर भी काम कर रहे हैं। यह सूची काफी लंबी है और हर गुजरते साल के साथ मानवविज्ञानी अनुप्रयोगों के नए क्षेत्रों में विस्तार कर रहे हैं। इन सभी क्षेत्रों में रोजमर्रा की जिंदगी की व्यावहारिक समस्याओं को हल करने के लिए मानवविज्ञान की ज्ञान विधियों और कौशल को उपयोग किया जाता है।

अपनी प्रगति जांचें

2. क्या अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एक संयुक्त अध्ययन क्षेत्र है? व्याख्या कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

3. भारत में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान के उपयोग के कौन कौन से क्षेत्र हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में दृष्टिकोण

अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान (एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी) जैसा कि नाम से पता चलता है, एक सामाजिक समस्या को हल करने या किसी सामाजिक मुद्दे को समझने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला मानवविज्ञान है। इसका प्राथमिक लक्ष्य समस्या समाधान

है। चूंकि, अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का उपयोग विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं में किया जाता है इसलिए अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में दृष्टिकोण का उपयोग इसके अनुप्रयोगों के क्षेत्रों द्वारा बारीकी से निर्धारित होता है। हम उन्हें व्यापक तौर पर इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते हैं:

- उप–विषयी विशेषज्ञता,
- क्रियात्मक दृष्टिकोण/कार्यकर्ता दृष्टिकोण,
- सहभागी विकास संबंधी दृष्टिकोण/ व्यवसायिक मानवविज्ञान,
- नीति आधारित शोधकार्य/सलाह/परामर्श आधारित दृष्टिकोण,
- व्यापार/निगम/बाज़ार आधारित दृष्टिकोण

अपनी प्रगति जांचें

4. वे कौन से कारक हैं जो अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में उपागमों (दृष्टिकोणों) को निर्धारित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 उप–विषयी व्यावहारिक विशेषज्ञताएं

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात, 1950 के दशक में मानवविज्ञान का अध्यापन करने के क्षेत्र में एक तीव्र छलांग लगाई गयी। विभिन्न विश्वविद्यालयों में मानवविज्ञान के नवीन विभाग खोले गए। इस समय के दौरान भारत में भी मानवविज्ञान विभागों में विस्तार हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय के बाद, मानवविज्ञान की शुरुआत दिल्ली, लखनऊ, गुवाहाटी एवं मद्रास विश्वविद्यालयों में की गयी थी। इस विस्तार की अनेक महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक थी उप–विषयी विशेषज्ञताओं का अस्तित्व में आना जैसे विकास, चिकित्सकीय, पर्यावरण, फोरेंसिक, एर्गोनॉमिक्स (श्रम–दक्षता शास्त्र), आणविक, शारीरिक, आपदा आधारित अध्ययन जो प्राथमिक रूप से व्यावहारिक पहलुओं की ओर उन्मुख थे। इन नवीन विषयों का अध्यापन अन्य विषयों जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक सिद्धान्त, संजातीय एवं सांस्कृतिक विविधताएँ के साथ किया जाता था। अनेक दूसरी विशेषज्ञताओं को निरंतर इसमें जोड़ा जाता रहा तथा इन सभी नवीन उप–विषयों के पाठयक्रमों में एक शक्तिशाली व्यावहारिक घटक समाहित होता है। अनेक शैक्षिक मानवविज्ञानी जिन्होने विश्वविद्यालयों में काम करते हुए सैद्धान्तिक समस्याओं पर काम किया है, उन्होने व्यावहारिक पहलुओं जैसे मूल्यांकन, बीमारी, शिक्षा एवं अन्य पर आधारित परियोजनाओं पर काम करना प्रारंभ कर दिया, जहां पर उन्होने मानव वैज्ञानिक ज्ञान को समस्याओं का समाधान करने के लिए उपयोग किया।

2.5 क्रिया दृष्टिकोण / क्रियात्मक मानवविज्ञान

क्रियात्मक मानवविज्ञान (एक्शन एंथ्रोपोलॉजी) शब्द, एक अमेरिकी मानवविज्ञानी सोल टैक्स द्वारा गढ़ा गया था जो शिकागो विश्वविद्यालय में उनके और उनके छात्रों द्वारा किए गए अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान अनुसंधानों को संदर्भित करता है। इसने परंपरागत व्यावहारिक मानवविज्ञान में एक परिवर्तनवादी विराम के रूप में अपने आप को चिन्हित किया। सोल टैक्स ने अनुभव किया कि सरकारी, गैर–सरकारी संस्थाओं अथवा अन्य संस्थानों में काम कर रहे मानव विज्ञानियों ने बहुधा अपने पैतृक प्रायोजित संस्था द्वारा निर्धारित कार्यसूचियों के आधार पर ही काम किया तथा इसलिए उनमें स्वतंत्र रूप से काम करने की एवं लोगों के लिए प्रतिबद्धता की कमी रही। उन्होंने और अधिक संलिप्तता आधारित दृष्टिकोण का आह्वान किया जिसमें मानवविज्ञानी अपने आप को मात्र शोध कार्यसूची तक सीमित न रखे अपितु लोगों को उनके लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करते हुए एक परिवर्तन लाने का भी प्रयास करे। क्रियात्मक मानवविज्ञानियों कि सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण परियोजना थी आईओवा राज्य के मेस्क्वकी इंडियन के साथ काम करना, जिसे फॉक्स परियोजना के नाम से भी जाना जाता है (कुलदेवता के नाम से कबीले का नाम)(पूर्वोक्त 258)। यह परियोजना 1948 में शुरू हुई तथा 1958 तक चली तथा इसने सांस्कृतिक विविधता के प्रति अमरीकन परियोजना मेल्टिंग पॉट दृष्टिकोण की एक आलोचना के रूप में काम किया था। क्रियात्मक मानव विज्ञानियों ने नियत हस्तक्षेप एवं वांछित हस्तक्षेप के बीच अंतर स्पष्ट किया। बाद वाला क्रियात्मक मानव विज्ञानियों का उद्देश्य था। उन्होने अनुभव किया कि अमरीकन पहचान के हटकर, फॉक्स के पास उनकी परंपरागत संजातीय पहचान एवं संस्कृति के बारे में जानकारी उपलब्ध थी। उनकी अपनी प्राथमिकताएं थीं जो यदा– कदा राज्य की बाह्य प्राथमिकताओं के समकालिक नहीं थी। इसलिए इस परिस्थिति में इन मानवविज्ञानियों की ही यह भूमिका बनती थी की वह मात्र सुविधाप्रदाता के रूप में काम करें, न कि परिवर्तन के निर्देशक के रूप में (पूर्वोक्त, 261)। उनके बीच के भेद को तालिका 1 में उल्लिखित किया गया है। आर्टुरो एस्कोबार, गुस्तावो एस्टेवा, माजिद रहनेमा, वोल्फगैंग सैक्स, जेम्स फर्ग्यूसन, सर्ज लाटौचे और गिल्बर्ट रिस्ट जैसे मानवविज्ञानियों द्वारा विकास के उत्तर औपनिवेशिक आलोचना में इस दृष्टिकोण को फिर से पुनर्निर्मित किया गया था।

तालिका 1: क्रियात्मक एवं व्यावहारिक मानवविज्ञान

क्रियात्मक मानवविज्ञान	व्यावहारिक(अनुप्रयुक्त)मानवविज्ञान
सक्रिय एवं संलिप्तता आधारित समस्या का समाधान प्रदान करने वाला दृष्टिकोण। मात्र सलाहकारों के रूप में ही कार्य नहीं करता अपितु सक्रिय रूप से समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बाह्य संस्थाओं के साथ हस्तक्षेप भी करता है।	सकारात्मक, शोधोन्मुख, मानवीय एवं समस्या उन्मुख दृष्टिकोण। मात्र क्षेत्रीय शोधकार्य तक सीमित।
क्रिया / कार्य उन्मुख	रोजगार उन्मुख
सीखना एवं सहायता करना केन्द्रीय विषय होते है।	शोधकार्य के वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति इसके प्राथमिक लक्ष्य होते हैं।

मानवविज्ञानी रोजगार की बाधाओं से मुक्त हैं। (स्वयंसेवा की भावना और मानवविज्ञानी की सापेक्ष स्वायत्तता के आधार पर)	स्वतन्त्रता के लिए कम स्थान। स्थायी कार्यसूची पर काम करता है।
जन केन्द्रितः लोग मात्र मानवविज्ञानी के अध्ययन का विषय ही नहीं अपितु लक्ष्य भी होते हैं।	लोग शोधकार्य का विषय होते हैं। शोधकार्य विषय केन्द्रित होता है।
आंतरिक परिप्रेक्ष्य हस्तक्षेपों पर आधारित	नियत हस्तक्षेप पर आधारित
लोगों का प्रतिनिधीत्त्व करते हुए उन्हे समस्या की पहचान करने में सहायता करता है, उन्हे संभावित समाधान का सुझाव देता है तथा उन्हे सर्वोत्तम विकल्प चुनने में सहायता करता है।	उन परिवर्तनों को प्रस्तुत करने में सहायता प्रदान करता है जो पहले से ही निर्धारित हो चुके हैं।
सहभागी नृवंश–विज्ञान(एथेनोग्राफी) पर आधारित।	स्वतन्त्रता जैसे मूल्य एवं सकारात्मकता आधारित नृवंश–विज्ञान (एथेनोग्राफी) पर अधिक बल होता है।

2.6 पेशेवर मानवविज्ञानी एवं व्यावहारिक मानवविज्ञानी

रेल डब्ल्यू. नोलन(2018) ने सुझाव दिया कि एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजिस्ट शब्द केवल उन मानवविज्ञानी तक ही सीमित होना चाहिए जो विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में काम करते हैं और साथ ही साथ अनुप्रयोग हेतु कार्य भी करते हैं।

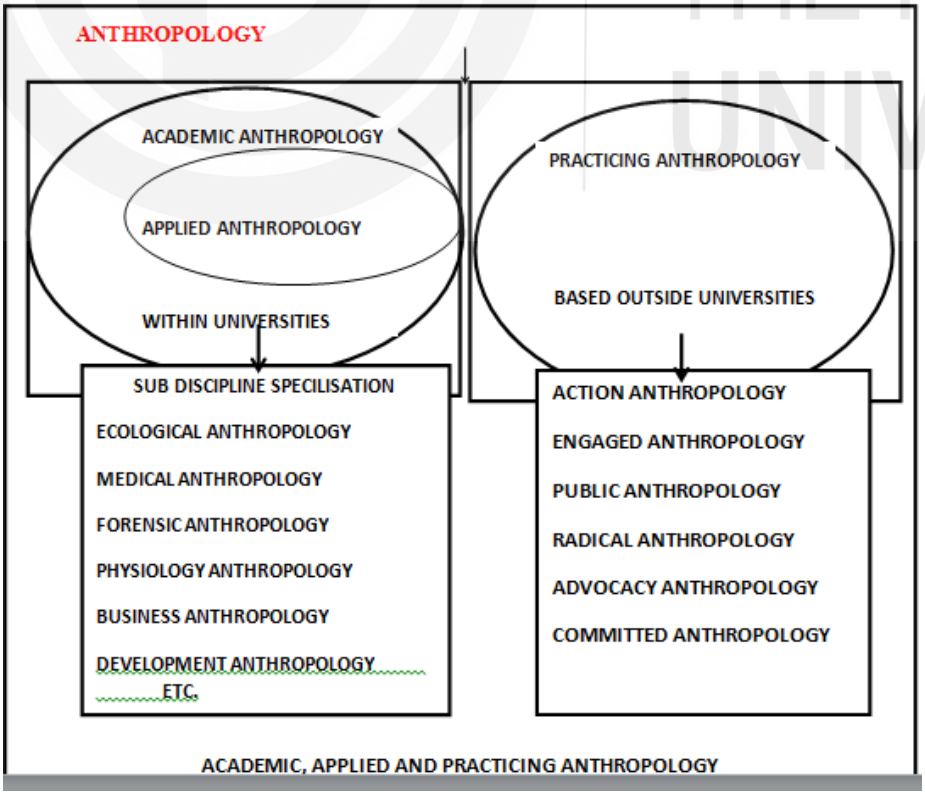

गतिविधि की प्रकृति और कार्य–स्थल के आधार पर उन्होंने अनुप्रयुक्त और पेशेवर(अभ्यास) मानवविज्ञान के बीच अंतर का सुझाव दिया। पेशेवर मानवविज्ञानी शब्द का प्रयोग उन लोगों के लिए किया जाता है जो अकादमिक विभागों से बाहर हैं और वास्तविक दुनिया की स्थिति इस अंतर पर विशेष रूप से समकालीन समय में पेशेवर मानवविज्ञानी द्वारा जोर दिया गया है जो खुद को मानवविज्ञानी के रूप में वर्णित करना पसंद करते हैं ताकि वे अनुप्रयुक्त(व्यवहारिक) मानवविज्ञानी के अतीत से अपना अंतर दिखा सकें। यह भेद नीचे दी गई तालिका में दर्शाया गया है

तालिका 2. व्यावहारिक एवं (पेशेवर)अभ्यासरत मानवविज्ञानी के बीच भेद

	व्यावहारिक मानवविज्ञानी	(पेशेवर)अभ्यासरत मानवविज्ञानी
स्थान	शैक्षणिक संस्थान, शोध संस्थान	बाहरी। निजी क्षेत्रों, एनजीओ इत्यादि में।
ज्ञान के प्रति दृष्टिकोण	ज्ञान की खोज दोनों प्रकार से हो सकती है, अंतिम छोर के साथ साथ इसके उपयोग के रूप में भी।	मात्र उपयोग के लिए ज्ञान। बिना किसी व्यावहारिक मूल्य के ज्ञान निरर्थक है।
कार्य परिवेश	ज्यादातर साथी मानवविज्ञानी के साथ काम करते हैं	एक बहु–विषयी दल में काम करना।
समस्या की प्रकृति	समस्या को स्वयं परिभाषित करने की स्वायत्तता प्राप्त है।	ज्यादातर समस्याएं दूसरों द्वारा निर्धारित की जाती हैं।
कार्यप्रणाली(प्रविधि)	कार्यप्रणाली मानव वैज्ञानिक तकनीक एवं इसकी विषयी वैधता के आधार पर होती है।	कार्यप्रणाली के बारे में छानबीन ध्यानपूर्वक ढंग से दूसरों के द्वारा की जाती है तथा इसलिए अन्य विषयों के लोगों द्वारा भी इसे मान्यता मिलने की आवश्यकता होती है।
संलिप्तता	अंशकालिक विशेषज्ञ। अन्य गतिविधियों जैसे अध्यापन एवं शोध के साथ जोड़ सकते हैं।	पूर्णकालिक विशेषज्ञ।
चुनौतियाँ	प्राथमिक रूप से सामने आई समस्या एवं इसके समाधान के संदर्भ में।	उन्हें मात्र समाधान ही प्रस्तुत नहीं करना होता अपितु इसके बारे में दूसरों से बातचीत एवं उन्हे इसके प्रति विश्वास भी दिलाना होता है। अन्य लोगों के द्वारा समाधान के लिए स्वीकार्यता यदा–कदा सामने आई समस्या से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

5. क्रियात्मक मानवविज्ञान को परिभाषित कीजिये। व्यावहारिक एवं क्रियात्मक मानवविज्ञान में अंतर स्पष्ट कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

6. व्यावहारिक, क्रियात्मक एवं अभ्यासरत मानवविज्ञान संज्ञाओं में भेद की जांच कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 सहभागी दृष्टिकोण

हम सहभागी दृष्टिकोण को विकास उदृष्टिकोण के रूप में भी संदर्भित कर सकते हैं क्योंकि इसकी उत्पत्ति विकास अध्ययन के क्षेत्र में हुई है। 1970 के दशक के दौरान आर्थिक विकास पर अपने संकीर्ण फोकस और प्रौद्योगिकी आधारित औद्योगीकरण, आधुनिकीकरण और शहरीकरण पर जोर देने के लिए विकास के आर्थिक सिद्धांत की बहुत आलोचना हुई। विकास के लाभ मात्र अभिजात एवं शक्तिशाली वर्ग, शहर की ओर केन्द्रित मध्यम वर्ग तथा ग्रामीण परिवारों के प्रभावशाली भू–स्वामियों तक ही सीमित थे। हाशिये पर रहने वाले गरीब, किसान, आदिवासी एवं ग्रामीण जनता का एक बड़ा भाग अप्रभावित ही रहा अथवा उन्होंने अपने आप को विकास के लाभार्थी की तुलना में सदैव एक पीड़ित के रूप में ही पाया। इसने दोनों लक्ष्यों के साथ–साथ विकास की प्रक्रिया के सिंहावलोकन का आह्वान किया गया। मानव, समाज, संस्कृति और पर्यावरण को विकास के दायरे में शामिल करने के लिए विकास के लक्ष्यों को विस्तृत किया गया। जिससे आर्थिक विकास के साथ–साथ मानव विकास, सामाजिक विकास, सांस्कृतिक विकास और सतत विकास भी विकास के महत्वपूर्ण उद्देश्य बन जाते हैं। विकास की उस प्रक्रिया की समीक्षा करने का भी आह्वान किया गया जिन्हें विदेशी, दूर, बहिर्जात परंपरा, स्थानीय संस्कृतियों और लोगों को विरोधी के रूप में देखा गया था। इसने विकास अध्ययनों में सहभागी दृष्टिकोण को जन्म दिया और अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए उभर कर सामने आया।

इससे पहले मानवविज्ञानी विकास प्रक्रिया में लगे हुए थे लेकिन उनकी भूमिका विकास प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए जानकारी प्रदान करने की अधिक थी। यह सुगमकर्ता दृष्टिकोण (फैसिलेटर एप्रोच) संस्कृति और विकास के बीच बेमेल खोजने पर आधारित था जहां लोगों द्वारा विकास को अस्वीकार कर दिया गया था। अनुप्रयुक्त

मानव विज्ञान को स्थिति का अध्ययन करने और विकास एजेंसियों को लोगों के विरोध को दूर करने और कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने में मदद करने के लिए माना जाता था। यहां अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान विकास एजेंसियों की सहायता के लिए था। हालांकि, सहभागी दृष्टिकोण में मानवविज्ञानी लोगों के हितों की ओर अधिक झुकाव रखते थे और लोगों द्वारा स्वीकृति के माध्यम से कार्यान्वयन सुनिश्चित करने में मदद करते थे। यह स्वीकृति का उद्देश्य ही था जिसने भागीदारी के सिद्धांत को सहभागी दृष्टिकोण के केंद्रीय कारक के रूप में जन्म दिया।

सहभागिता

भागीदारी शब्द का तात्पर्य विकास प्रक्रिया में समुदाय की भागीदारी से है। भागीदारी लोगों की स्थिति में केवल लाभार्थियों से परिवर्तन और विकास के महत्वपूर्ण एजेंट की स्थिति में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है। विकास प्रक्रिया में वह मात्र निष्क्रिय आदाता से सक्रिय कर्ता बन जाते हैं। यह तभी होता है जब लोगों को अपना मत रखने का अवसर दिया जाता है अर्थात जब वह स्वयं इस बात का निर्णय कर सकें की वे क्या चाहते हैं एवं इसे किस प्रकार होने देना चाहते हैं। यह सम्पूर्ण सहभागिता होती है, जो बहुधा कभी नहीं हो पाती। लोगों की सहभागिता के विभिन्न स्तर होते हैं तथा हम लोगों की संलिप्तता को पाँच प्रकार के अबाध क्रम के माध्यम से देख सकते हैं:

क) सूचना साझा करनाः सहभागिता के इस रूप में लोगों के साथ मात्र किसी कार्यक्रम के बारे में जानकारी साझा की जाती है, जिसमें उनकी सहभागिता की कोई संभावना नहीं होती। उनका किसी मामले में कोई मत नहीं होता तथा गैर–सहभागी दृष्टिकोणों की तरह वह मात्र निष्क्रिय आदाता होते हैं।

ख) छद्म सहभागिताः छद्म भागीदारी में, वह सब जो सहभागी दृष्टिकोण के अंतर्गत किया है, उसी का अनुसरण किया जाता है परंतु लोगों का बिना उनके विचार जाने उन्हें परामर्श दिया जाता है तथा नियोजित कार्यक्रम में उनका कोई मत नहीं होता। यह सहभागी प्रतीत होता है परंतु वास्तविकता में, यह किसी गैर–सहभागी दृष्टिकोण की तरह ही होता है।

ग) अर्ध–सहभागिताः अर्ध–सहभागी दृष्टिकोण में लोगों के साथ मात्र सीमित, चयनित मशवरा किया जाता है। चूंकि परामर्श देने–लेने का प्रारूप पहले से ही किसी संस्था द्वारा निर्धारित होता है, वहाँ पर लोगों की सहभागिता की एक सीमित संभावना ही होती है। इसे नियंत्रित सहभागिता भी कहते हैं।

घ) सहयोगात्मक सहभागिताः इस प्रक्रिया में विकास कार्यक्रमों में लोगों का मत एवं संलिप्तता अधिक होती है। कार्यक्रमों के लक्ष्यों को लोगों के सहयोग से साझा, परिवर्तित एवं संशोधित किया जाता है। वह क्रियान्वयन में भी अपनी भूमिका निभाते हैं। वह विकास कार्यक्रम के प्रबंधन में भी अपने मत के साथ एक सक्रिय सहभागी होते हैं।

ङ) सशक्तिकरण के रूप में सहभागिताः यह सहभागिता का एक आदर्श रूप है। यहाँ पर विकास का लक्ष्य लोगों का सशक्तिकरण होता है। इस दृष्टिकोण में वह मात्र सक्रिय सहभागी ही नहीं होते, अपितु वह कार्यक्रम के संचालक भी बन जाते हैं। इस व्यवस्था में विकास संस्था की भूमिका सम्पूर्ण रूप से उलट जाती है। वह

उन लक्ष्यों के समन्वयक बन जाते हैं, जिनका निर्धारण स्वयं समुदाय के सदस्यों ने किया होता है।

सहभागी दृष्टिकोण में व्यावहारिक मानवविज्ञानी एक बाहरी विशेषज्ञ की भूमिका से निकालकर लोगों के प्रति एक मित्र, मार्गदर्शक, अध्यापक एवं दार्शनिक की भूमिका में परिवर्तित होते हैं। वह लोगों को जानकारी प्रदान करने में निष्पक्ष रहते हैं, जो उन्हे विभिन्न विकल्पों के बारे में निर्णय लेने तथा उन्हें उन विकल्पों के लाभ एवं हानियाँ समझाने में सहायक होता है। मानवविज्ञानी अधिक बुद्धिमान परामर्शदाताओं की तरह हैं जो लोगों को उनके सर्वोत्तम हित की सेवा के लिए सही निर्णय पर पहुंचने के लिए मार्गदर्शन करते हैं। इस दृष्टिकोण में लोगों की संज्ञानात्मक और व्यवहारिक प्रक्रिया को प्रभावित करके उनका सशक्तिकरण शामिल है ताकि वे अपने डर, शंकाओं, झिझक और अन्य बाधाओं को दूर कर सकें जो उन्हें खुद को व्यक्त करने से रोकते हैं।

अपनी प्रगति जांचें

7. अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में सहभागी दृष्टिकोण का अध्ययन करते हुए सहभागिता के कौन कौन से विभिन्न प्रकारों का ज्ञान होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 लोक–नीति विज्ञान के रूप में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान

सार्वजनिक या लोक नीति को एक मार्गदर्शक दस्तावेज के रूप में परिभाषित किया गया है जो स्पष्ट रूप से उद्देश्यों और उन्हें प्राप्त करने के साधनों को बताता है। वे सरकार द्वारा तैयार किए गए सार्वजनिक सरोकार के किसी भी क्षेत्र में कार्रवाई के दस्तावेज हैं, जो स्पष्ट रूप से सार्वजनिक अधिकारियों के लिए कार्य करने और सार्वजनिक कल्याण के लिए सरकार के घोषित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए रूपरेखा निर्धारित करते हैं। ऊपर से नीचे की बजाय नीचे से ऊपर की ओर वाले दृष्टिकोण में जनता के परिवर्तनशील प्रतिमान के साथ, नीति प्रक्रिया में व्यावहारिक मानवविज्ञान का महत्त्व कई गुणा बढ़ गया है। नीति निर्माताओं को जानकारी प्रदान करने में मानवविज्ञानी अपने अनुभवजन्य, स्वस्थानी और आधारभूत ज्ञान के साथ सबसे अच्छी स्थिति में हैं। नए ढांचे में वे बहु–विषयक टीमों में प्रभावी ढंग से काम करने की उनकी क्षमता के कारण सार्वजनिक नीति बनाने में भी शामिल होते हैं। अपने व्यावहारिक ज्ञान के कारण वे जमीनी स्तर पर नीति निर्माण और कार्यकरण में अंतराल को आसानी से देख सकते हैं और इस प्रकार एक सफल नीति प्रक्रिया में योगदान कर सकते हैं। सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान जो व्यावहारिक मानवविज्ञानी नीति विज्ञानों में शोधकार्य करने के निश्चित साधनों के द्वारा करते हैं, उसमें सम्मिलित हैं:

- आवश्यकता का मूल्यांकन
- सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन
- मूल्यांकन अध्ययन
- सामाजिक वांछनीयता एवं संभाव्यता विश्लेषण, वान विलिगन (2002:167)

इस प्रकार मानवविज्ञानी उन सभी नीतियों में सक्रिय रूप से शामिल रहे हैं जो आदिवासी समुदायों से संबंधित हैं। वे खनन नीति, आदिवासी नीति, वन नीति और अनुसूचित जनजाति और अन्य पारंपरिक वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 जैसे महत्वपूर्ण अधिनियमों के निर्माण में सबसे आगे थेय वे भूमि अधिग्रहण, पुनर्वास और पुनर्वास अधिनियम, 2013 के उचित मुआवजे और पारदर्शिता के अधिकार निर्माण में भी सहयोगी हैं।

अपनी प्रगति जांचें

8. नीति अनुसंधान में प्रयुक्त अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान की चार महत्वपूर्ण तकनीकें कौन–सी हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.9 व्यापारिक एवं निगमित मानवविज्ञान में व्यावहारिक मानवशास्त्र

वैश्वीकरण के कारण दुनिया सिकुड़ रही है और व्यापार और कॉर्पोरेट जगत में संस्कृति की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। कई अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी अब प्रबंधन परामर्श और बहुराष्ट्रीय संगठनों के लिए काम कर रहे हैं जो विपणन और व्यवसाय की दुनिया में उनकी मानवशास्त्रीय अंतर्दृष्टि और दृष्टिकोण के माध्यम से योगदान दे रहे हैं।

व्यावहारिक मानवविज्ञानियों की विशेषज्ञताः कुछ निश्चित कौशल सेटिंग्स (समुच्चय) हैं जो अन्य विषयों के लोगों की तुलना में एक अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान को एक बेहतर सहूलियत प्रदान करता हैं। सारा पिंक (2006) ने निम्नलिखित को अनुप्रयुक्त(एप्लाइड) मानवविज्ञानी की विशेषज्ञता के रूप में पहचाना है जो उन्हें अन्य विशेषज्ञों से अलग करता है।

संस्कृति को प्रधानताः व्यावहारिक मानवविज्ञानी संस्कृति को मानव गतिविधियों के महत्त्वपूर्ण निर्धारकों के रूप में पहचानने एवं मान्यता देने में प्रशिक्षित होते है। वह किसी मनुष्य की गतिविधि एवं व्यवहार के पीछे छुपे सांस्कृतिक कारकों को स्पष्ट रूप से पहचान सकते हैं।

आधारभूत, अनुभवजन्य और आगमनात्मक दृष्टिकोण: फील्डवर्क के माध्यम से एक अनुभवजन्य समझ से महत्व जुड़ा हुआ है, और एक व्यक्तिगत दृष्टिकोण अनुप्रयुक्त अनुसंधान की एक बानगी रहा है। नोलान (2003:119) ने इसे "पहले से ही सिद्धांतों को थोपने की बजाय ज़मीनी स्तर पर एक प्रेरणिक दृष्टिकोण" के रूप में संदर्भित किया है।

परिणाम की तुलना में प्रक्रिया को प्रधानता: व्यावहारिक मानव विज्ञानियों ने सदैव ही किसी परिस्थिति को समझने के लिए परिणामों की तुलना में प्रक्रियाओं पर अधिक बल दिया है। रे (2006:677) के अनुसार जो बात मानवविज्ञानी को अर्थशास्त्रियों से अलग करती है, वह यह है कि जहां अर्थव्यवस्था में अनुसंधान सटीक भविष्यवाणियों में मदद करने वाले परिणामों या निष्कर्षों पर अधिक जोर देता है, वहीं दूसरी ओर मानवशास्त्रीय निष्कर्ष प्रक्रिया के आधार पर भविष्यवाणियों पर जोर देते हैं। मानवविज्ञानी भविष्यवाणी के लिए किसी भी स्थिति में शामिल संबंधों, मूल्यों और शक्ति गतिकी पर ध्यान केंद्रित करते हैं

अंतर–सांस्कृतिक कौशल: व्यावहारिक मानवविज्ञानी चीजों को तुलनात्मक रूप से अधिक व्यापकता एवं अपेक्षाकृत रूप से सहानुभूति के साथ देखने के लिए प्रशिक्षित होते हैं। व्यक्तिनिष्ठ पूर्वाग्रहों से जानबूझकर बचा जाता है तथा व्यावहारिक दृष्टिकोण में यह निषिद्ध के रूप में होते हैं।

नृजातीय (एथेनोग्राफिक)कौशल: विशेषज्ञता शोधकार्य की एक प्रकार की नृजातीय शैली है तथा किसी प्रसंग की जटिलता को छोड़े बिना स्पष्ट रूप से संवाद करने की क्षमता है।

सूचित एवं अंतर्निहित समझ: चीजों के निहित एवं स्पष्ट दोनों अर्थों को उजागर करना एवं समझना। जो किसी परिस्थिति में स्पष्ट होता है उसके पीछे निहित कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका की पहचान।

आणविक(एटोमिक) एवं समग्र समझ: किसी मुद्दे की ओर इसके संघटक इकाइयों में तोड़कर व्यवस्थित ढंग से दृष्टिकोण, अर्थात जटिल चीजों को सरल बनाना एवं इसका विपरीत अर्थात चीजों की तरफ एक समग्र ढंग से देखना। किसी प्रक्रिया को आणविक स्तर पर संयोजन, तत्पश्चात समग्र रूप से एकीकृत करके समझना इस विषय की एक अद्वितीय विशेषता है।

विवेकशील प्रतिमान और प्रवृत्ति विश्लेषण में विशेषज्ञता: सामाजिक परिस्थितियों में गतिविधियों एवं व्यवहार (जो ज़ाहिर रूप से एक विवेकाधीन प्रतीत होता है) का अवलोकन करने की क्षमता।

गतिशील एवं उदारवादी दृष्टिकोण: नवीन विचारों, जटिलताओं को संभाल पाने का लचीलापन एवं बहु–विषयी दल में काम करने की क्षमता।

जटिल परिस्थिति में काम करने की क्षमता: कार्य की कठोरता तथा कठिन, अशरण्य स्थितियों जैसे युद्ध, आपदा एवं प्रकृतिक विपदाओं में काम करने की क्षमता(मित्रा 2002:164)।

अपनी प्रगति जांचें

9. अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानियों के कौन से कौशल समूह हैं जो उन्हें अन्य विषयों के लोगों से अलग करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.10 सारांश

यह इकाई विद्यार्थियों के लिए उन दृष्टिकोणों की व्याख्या करने का प्रयास करती है जो व्यावहारिक मानवविज्ञान का अध्ययन एवं क्रियान्वयन करने के लिए उपलब्ध हैं। यह न केवल स्पष्टता एवं वर्गीकृत ढंग से विभिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन करती है, बल्कि साथ ही यह सूचना भी प्रदान करती है कि कैसे प्रत्येक विभिन्न परिदृश्य महत्त्वपूर्ण है तथा उनका तदनुसार उपयोग किस प्रकार होता है। यहाँ पर यह इकाई उन उप–क्षेत्रों के बारे में सूचित करती है जिनसे व्यावहारिक मानव विज्ञानियों का सामना होता है तथा कैसे उन क्षेत्रों में अभ्यासरत मानव विज्ञानियों के रूप में कार्य करते हुए व्यापकता लायी जाती है। एक अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी और पेशेवर मानवविज्ञानी के बीच का अंतर सचित्र है, हालांकि यह अंतर अभ्यास से अधिक प्रतिनिधित्व का है। यह पाठ स्पष्ट रूप से बताता है कि किस प्रकार अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी लोगों के जीवन को व्यावहारिक समाधान प्रदान करके क्रियात्मक मानवविज्ञान में भाग लेते हैं और नीतियों और योजनाओं के निर्माण में अपनी बड़ी भूमिका निभाते हैं। आज की दुनिया में वैश्वीकरण की उपस्थिति के कारण कॉर्पोरेट और व्यावसायिक मानवविज्ञान को शामिल करने के महत्व के साथ इकाई समाप्त होती है।यह इकाई प्रभावशाली ढंग से विद्यार्थियों को इस पाठयक्रम में आगे आनेवाली इकाइयों को बेहतर ढंग से समझने के लिए एक द्वार खोलती है।

2.11 संदर्भ

Mitra, R.P. (2011). "On the Practice of Anthropology".In *Anthropology in India*.Edited by Saxena.H.S., Vinay K. Srivatava et al. New Delhi: Serial Publication pp 128-146

Nollan, R.W.N. (2018). "Applied Anthropology".In *The International Encyclopedia of Anthropology*. Edited by Hilary Callan. NewYork: JohnWiley & Sons, Ltd.

Pink, S. (2006). "Application of Anthropology".*Application of Anthropology as Professional Anthropology in the Twenty-First Century.*In S. Pink S. (ed.). New York: Berghahn Books.

Tax, Sol. (I964)."The uses of anthropology," in *Horizons of Anthropology*. Sol Tax (ed.), pp. 248-58. Chicago: Aldine.

Van Willigen, John. (2006). *Applied Anthropology: An Introduction*. Westport: Bergin & Garvey.

2.12 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1) मानवशास्त्रीय ज्ञान को लागू या उपयोग करने के दो तरीके *ऑफ एंथ्रोपोलाजिकल* एवं *फॉर एंथ्रोपोलाजिकल* हैं।

2) अनुभाग 2.2 का पहला और दूसरा पैराग्राफ देखें।

3) अनुभाग 2.2 का तीसरा पैराग्राफदेखें।

4) अनुभाग 2.3 देखें।

5) अनुभाग 2.5 देखें।

6) अनुभाग 2.6 देखें।

7) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में भागीदारी(सहभागिता) दृष्टिकोण में हमें जिन विभिन्न प्रकार की सहभागिता का सामना करना पड़ सकता है, वे हैंः सूचना साझा करना, छद्म–भागीदारी, अर्ध–भागीदारी, सहयोगात्मक भागीदारी, और सशक्तिकरण के रूप में भागीदारी।

8) वह हैंः आवश्यकता का मूल्यांकन, सामाजिक प्रभाव मूल्यांकन, मूल्यांकन अध्ययन, सामाजिक वांछनीयता एवं संभाव्यता विश्लेषण।

9) अनुभाग 2.9 देखें।

इकाई 3 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता*

इकाई की रूपरेखा

3.0 परिचय

3.1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का उद्‌भव एवं नैतिकता के प्रश्न

3.2 कार्यात्मक एकता की अवधारणा, उपनिवेशवाद एवं अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता

3.3 संपर्क मानवविज्ञान, संस्कृति परिवर्तन एवं नैतिकताःएक व्यावहारिक मानवविज्ञानी के रूप में मलिनोवस्की का परीक्षण

3.4 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान , द्वितीय विश्व युद्ध एवं नैतिकता

3.5 कैमलोट परियोजना एवं मानव भू–भाग प्रणाली

3.6 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता का वर्णन एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्व

3.7 सारांश

3.8 संदर्भ

3.9 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

अधिगम के परिणाम

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत विद्यार्थी सक्षम होंगेः

- मानवविज्ञान के ऐतिहासिक विकासके संदर्भ में नैतिकता को परिभाषित करने में;
- इस बात की व्याख्या करने में कि किस प्रकार औपनिवेशवाद ने अध्ययन के अंतर्गत आने वाले समुदायों के नैतिक मुद्दों की रूपरेखा तैयार की;
- इस बात की व्याख्या करने में कि किस प्रकार मलिनोवस्की ने नैतिकता एवं प्रायौगिक मानवविज्ञान को बढ़ावा दिया;
- किसी मानवविज्ञानी के लिए नैतिक मुद्दे क्या होने चाहिए, इस बात को पुनर्गठित करने में द्वितीय विश्व युद्ध के प्रभाव की व्याख्या करने में; तथा
- सांस्थानिक संगठन, एसएफएए(SfAA), द्वारा तैयार किए गए नैतिक मानदंडो की पहचान करने में।

3.0 परिचय

नैतिकता का विचार हमारे आसपास के लोगों को 'कोई नुकसान न करने' की धारणा से जुड़ा है। मानवविज्ञानी के लिए ये वे लोग हैं जो 'अध्ययन' या क्षेत्र से जुड़े हैं और जहां मानवविज्ञानी अपना क्षेत्रकार्य संचालित करते हैं। यह मानवविज्ञानियों का उत्तरदायित्व होता है कि वह इस बात को सुनिश्चित करें कि उनके द्वारा किया गया कार्य किसी भी तरह लोगों तथा उनके सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने को हानि न पहुंचाए। बल्कि यह एक कठिन मुद्दा है, चूंकि विभिन्न संदर्भों में क्षेत्रकार्य में नवीन चुनौतियाँ होती हैं तथा क्षेत्रकार्य कर रहे मानव विज्ञानियों अथवा क्षेत्र कार्यकर्ताओं

*डॉ प्रशांत खत्री, मानवविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज,उ.प्र.

(फील्ड वर्करों) को उन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है तथा नैतिकता के उन मुद्दों को सुलझाना पड़ता है जो उत्पन्न हो सकती हैं। यही कारण है कि सभी परिस्थितियों में एक सार्वभौमिक नैतिक संहिता को लागू करना एक आदर्शलोक स्थापित करने जैसा है। फिर भी, मानव विज्ञानियों को यह स्मरण रहना चाहिए कि उनका प्राथमिक लक्ष्य उन लोगों की रूचियों की रक्षा करना है, जिनके साथ वह काम कर रहे हैं। उन्हे इस तथ्य के प्रति भी सचेत रहना चाहिए कि उनके द्वारा किये गए शोधकार्य का उपयोग प्रशासकों द्वारा लोगों के लिए नीतियों का कार्यान्वयन करने के लिए भी किया जा सकता है। इस प्रकार व्यावहारिक मानवविज्ञान को उस मानवविज्ञान के रूप में देखा जा सकता है जो शुद्ध शोधकार्य एवं प्रशासन के बीच एक सेतु का काम करता है। अन्य शब्दों में, मानव वैज्ञानिक ज्ञान एवं शोधकार्य परिणामों का उपयोग नीति निर्माण करनेवालों एवं प्रशासकों द्वारा किया जा सकता है। यह हमें व्यावहारिक मानवविज्ञान के प्रारम्भ के बारे में एक महत्त्वपूर्ण समझ बनाने में सहायता प्रदान करता है। इस बारे में तर्क–वितर्क किया जाता रहा है कि मानव वैज्ञानिक ज्ञान का प्रयोग स्वयं में मानवविज्ञान विषय जितना ही पुराना है। यह इस बात की ओर भी इंगित करता है कि नैतिक मुद्दे मानव वैज्ञानिक ज्ञान एवं सिद्धान्त के प्रयोग का एक महत्त्वपूर्ण भाग थे (पोडोलेफ़्स्की, एवं अन्य 2003)।

मानववैज्ञानिक ज्ञान, जिसकी उत्पत्ति मानव संस्कृति एवं जैविक विविधताओं की व्याख्या करने के लिए हुई, का उपयोग औपनिवेशिक प्रशासकों द्वारा अपने औपनिवेशवाद के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए किया गया था। कोई भी ज्ञान राजनीति और उस व्यापक सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य से रहित नहीं है जिसमें वह उत्पन्न होता है और उपयोग में लाया जाता है। इस अर्थ में नैतिकता का पूरा मुद्दा एक बहुत ही संबंधपरक विषय बन जाता है। तत्पश्चात यह प्रश्न उठता है कि इस ज्ञान का उपयोग कर कौन रहा है और किस उद्देश्य के लिए। सम्पूर्ण विश्व विभिन्न शिविरों में विभाजित प्रतीत होता है, जिनका मार्गदर्शन कुछ निश्चित विचारधाराओं द्वारा होता है। उदाहरण के लिए, कुछ ऐसी विचारधाराएँ हैं जो आर्थिक विकास के मुद्दे को आगे बढ़ाती हैं जिसके लिए बांध निर्माण करने एवं धातुओं के उत्खनन की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, कुछ विचारधाराएँ हैं जो उन लोगों के मुद्दे को आगे बढ़ाती हैं जो इन बड़ी परियोजनाओं से प्रभावित होते हैं। चूंकि, इनके कारण उन लोगों की जमीन चली जाती है और उनकी पूरी पारिस्थितिकी तंत्र नष्ट हो जाता है। अब नैतिकता का मुद्दा एक ऐसे मार्ग पर आ जाता है जिसका कोई अंत नहीं है तथा आगे बढ़ते ही यह और जटिल हो जाता है। उन मानव विज्ञानियों को, जो लोगों के लिए आवाज़ उठाते हैं तथा बड़ी परियोजनाओं का विरोध इस आधार पर करते हैं कि इनमें एक बड़े पैमाने पर लोगों को इसकी कीमत चुकनी पड़ती है, उन्हे प्रशासकों एवं नीति निर्माण करने वालों द्वारा विकास–विरोधी की दृष्टि से देखा जा सकता है। इसी प्रकार मानवविज्ञानी ऐसी नीतियों को, जो लोगों से उनकी ज़मीन और जंगल छीन ले, अनैतिकता के रूप में देखते हैं।

इसलिए यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि नैतिकता को क्या करें और न करें को मात्र एक सूची के रूप में नहीं बल्कि एक विमर्श के रूप में देखा जाए। अन्य शब्दों में, नैतिकता वह होती है, जिसका अर्थ अलग–अलग हितधारकों के लिए भिन्न–भिन्न वस्तु होता है। यह समझ एक समुदाय के विषम परिप्रेक्ष्य पर आधारित है। जब यह कहा जाता है कि एक अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी का प्राथमिक लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि नीति निर्माण में समुदाय का प्रतिनिधित्व किया जाता है और इसमें

परिवर्तन की कल्पना की जाती है, तो प्रश्न उठता है कि समुदाय का निर्माण कौन करता है? क्या समुदाय का हर समय और हर जगह पूरी तरह प्रतिनिधित्व किया जा सकता है? समुदाय में विभिन्न हित समूह कौन से हैं जो किसी भी परियोजना से अलग तरह से प्रभावित होते हैं? यह भी तर्क दिया गया है कि स्वदेशी ज्ञान को परिवर्तन एजेंटों का मार्गदर्शन करना चाहिए और नीति को अधिक समावेशी और जन केंद्रित बनाने के लिए स्वदेशी दर्शन को शामिल किया जाना चाहिए। हालांकि, फिर सवाल उठता है कि हमें किसके स्वदेशी ज्ञान को ध्यान में रखना चाहिए? इस संबंध में कुछ संघर्ष या मतभेद हो सकते हैं और एक समुदाय या किसी परियोजना से प्रभावित होने वाले लोग इस विषय पर अलग–अलग विचार रख सकते हैं। इस प्रकार इस संदर्भ में भी नैतिक मुद्दे कुछ हद तक छलावे वाले हो जाते हैं (नेम एवं रिंकर, 2016)।

इस इकाई में हम उन नैतिक मुद्दों के बारे में जानेंगे जो मानवशास्त्रीय ज्ञान के प्रयोग से जुड़े हैं। मानवशास्त्रीय प्रतिमानों के विभिन्न बदलावों ने मानवशास्त्रीय ज्ञान के अनुप्रयोग से संबंधित विभिन्न नैतिक मुद्दों को जन्म दिया। हम यह भी देखेंगे कि किस प्रकार व्यावसायिक अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानियों के कुछ संगठनों ने अनुप्रयुक्त(व्यवहारिक) मानवविज्ञान के लिए आचार संहिता बनाने का प्रयास किया है।

अपनी प्रगति जांचें

1) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानियों का प्राथमिक लक्ष्य क्या होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3.1 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का उद्‌भव एवं नैतिकता के प्रश्न

एक विषय के रूप में मानवविज्ञान का उद्‌भव उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में हुआ। यह मात्र आंकड़ों एवं सिद्धान्त की एकजुटता के कारण ही संभव हो पाया था। 'अन्य' के बारे में आंकड़े 'नृवंशविज्ञानों' के रूप में उपस्थित थे, जिन्हें एकत्रित करने के प्रयास धर्म–प्रचारकों, फ़ौजियों, यात्रियों एवं प्रशासकों द्वारा किए गए। इन आंकड़ों द्वारा प्रस्तुत किया गया मुख्य प्रश्न था– सांस्कृतिक मूल्यों में भिन्नता वाले विभिन्न प्रकार के समाज क्यों मौजूद हैं? इस प्रश्न का उत्तर क्रमागत उन्नति के सिद्धान्त द्वारा उपलब्ध हो पाया। इस बात पर तर्क–वितर्क किया गया कि विभिन्न संस्कृतियाँ क्रमागत उन्नति के विभिन्न चरणों में हैं तथा वह सभी मानव सभ्यता के उस निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए एक समान चरणों से होकर गुजरेंगी जिनका उदाहरण पश्चिम देशों ने प्रस्तुत किया है। इसने पश्चिम देशों पर एक प्रकार के कर्तव्यपरायणता एवं नैतिकता का उत्तरदायित्त्व बढ़ा दिया। किसी 'असभ्य' को सभ्य' बनाना एक श्वेत व्यक्ति की ज़िम्मेदारी समझा जाने लगा। इसलिए नैतिकता के मुद्दे को मानवविज्ञान के विषय की उत्पत्ति के साथ ही लिपटा हुआ देखा जा सकता है। यह श्वेत व्यक्तियों की ज़िम्मेदारी समझी गयी कि वह इस बात को सुनिश्चित करें कि हर व्यक्ति हर

जगह सभ्यता के लाभ का आनंद ले तथा अपने से 'निम्न' भाई–बहनों को सभ्यता के निष्कर्ष तक अधिक तीव्रता से पहुँचने में सहायता करें। मानवविज्ञान में क्रमागत उन्नति के परिप्रेक्ष्य को मानवीय सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्रमागत उन्नति की प्रक्रिया एवं चरणों के प्रश्न के साथ जोड़कर देखा गया। इस ज्ञान को उत्संस्करण की प्रक्रिया में प्रयोग किया जाना था, ताकि उन लोगों की सहायता की जा सके जो अभी तक 'असभ्यता' एवं 'जंगलीपन' के चरणों से ही गुज़र रहे थे। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि मानवविज्ञान के उद्भव के साथ ही, इस विषय के व्यावहारिक आयाम का भी उद्भव हुआ। ऐसा भी कहा जा सकता है कि मानव वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करते हुए लोगों को उनके सांस्कृतिक विकास एवं उन्नति के चरणों के आधार पर वर्गीकृत करने तथा उन्हे अपनी संस्कृति के सर्वोत्तम स्तर तक पहुँचने में सहायता करने के साथ ही नैतिकता के सम्पूर्ण मुद्दे का उद्भव हुआ(बास्टाइड, 1974)।

विकासवाद के सिद्धान्त ने उपनिवेशवाद की अवधारणा को भी प्रोत्साहित किया। विकासवाद ने उपनिवेशवाद को और अधिक नैतिक दिखने में सहायता की, चूंकि यह तर्क दिया गया कि उपनिवेशित लोगों की उन्नति एवं विकास के लिए पाश्चात्य प्रभुत्त्व एवं प्रशासन अनिवार्य था। विकासवाद के सिद्धान्त को औपनिवेशिक राज को वैधता प्रदान करने के लिए प्रयोग किया गया। सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकासवाद की अवधारणा को प्रस्तुत करने को अपने आप में वैज्ञानिक समझा गया। चूंकि इस सिद्धान्त को शारीरिक विज्ञानों में चार्ल्स डार्विन के कार्यों द्वारा अच्छे से स्थापित किया था तथा ऐसा सोचा गया था कि समाज का अध्ययन करने के लिए प्रकृतिक सिद्धांतों का भी प्रयोग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, मानव सभ्यता प्रक्रिया में चरण के आधार पर विभिन्न संस्कृतियों को वर्गीकृत करने को स्वयं एक वैज्ञानिक कार्य माना गया। इसलिए विकासवाद की जुड़वां अवधारणाओं एवं विज्ञान को विश्व भर में लोगों के कुछ निश्चित समूहों पर प्रभुत्त्व स्थापित करने के लिए प्रयोग किया गया था। विकासवाद के सिद्धान्त ने एक जातीयतावाद केन्द्रित (एथनोसेंट्रिक) पूर्वाग्रह को जन्म दिया जिसे अनैतिक समझा जा सकता है(बास्टाइड,1974)।

अपनी प्रगति जांचें

2) 19वीं शताब्दी के मध्य में मानवशास्त्रीय ज्ञान के अनुप्रयोग में शामिल नैतिक मुद्दों की चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) मानवशास्त्रीय ज्ञान के प्रयोग को औपनिवेशिक लक्ष्यों और उद्देश्यों को बढ़ावा देने के साथ कैसे जोड़ा जाता है?

.....

.....

.....

.....

अगला चरण जो जातीयतावाद की आलोचना से विकसित हुआ, वह सांस्कृतिक सापेक्षवाद का था। फ्रांज़ बोआस द्वारा प्रसारित यह दृष्टिकोण इस समझ पर आधारित था कि कोई भी संस्कृति एक दूसरे से वरिष्ठ अथवा हीन नहीं होती। सभी संस्कृतियों को उनके अपने संदर्भ में देखा जाना चाहिए। हालांकि इस भावना का पालन नहीं किया गया। मानव विज्ञानियों ने यह तर्क दिया कि सांस्कृतिक सापेक्षवाद विकासवाद के सिद्धान्त का ही दूसरा नाम है। यह भी तर्क दिया गया कि पश्चिम देशों ने पूंजीवादी लक्ष्यों को आगे बढ़ाने के लिए सापेक्षवाद की अवधारणा का उपयोग किया। हालांकि, 'अन्य संस्कृति' के साथ और अधिक सम्मानित ढंग से व्यवहार किया गया परंतु परिवर्तन, यदि कोई है, तो वह पश्चिम देशों की ओर उन्मुख होना चाहिए (बास्टाइड,1974)।

3.2 कार्यात्मक एकता की अवधारणा, उपनिवेशवाद एवं अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता

जब हम औपनिवेशिक कालीन मानवविज्ञान की ओर मुड़कर देखते हैं, तो हम पाते हैं कि औपनिवेशिक लक्ष्य एवं उद्देश्य मानव वैज्ञानिक ज्ञानोत्पत्ति के केंद्र बिन्दु थे। तथाकथित 'प्रगतिशील' सिद्धान्तों एवं अवधारणाओं को जब एक आलोचनात्मक एवं उत्तर–औपनिवेशिक दृष्टिकोण से विश्लेषित किया जाता है, तो उससे अनेक नैतिक मुद्दे निकलकर आते हैं जिनके लिए मानव वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग किया गया था। यह मात्र प्रशासक ही नहीं थे जिन्होंने उस ज्ञान का उपयोग किया अपितु मानवविज्ञानी भी 'अन्य' के बारे में उस प्रकार के ज्ञान एवं समझ का सृजन करने की प्रवृत्ति रखते थे जो उपनिवेशवाद के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों का समर्थन करती थी। यह काफी हद तक इस तथ्य के कारण था कि ब्रिटिश उपनिवेशों में अधिकांश मानवशास्त्रीय शोध अंग्रेजों के प्रशासनिक नियंत्रण में किए गए थे और प्रशासन द्वारा वित्त पोषित थे। प्रकार्यवाद के पूरे सिद्धांत और कार्यात्मक एकता के विचार को जो उसने प्रतिपादित किया, उसकी आलोचना विचार और शासन की औपनिवेशिक प्रणाली से प्रभावित होने के कारण की गई है।

विकासवाद के सिद्धांत के प्रति ब्रिटिश प्रतिक्रिया बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में प्रकार्यवाद के विचार में आई। सामाजिक विकासवाद के काल्पनिक होने के कारण इसकी आलोचना की गई थी। इसे सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के एक बहुत ही भव्य और सार्वभौमिक सिद्धांत के रूप में देखा गया था, जिसे इतने बड़े पैमाने पर सबूतों के आधार पर साबित करना असंभव था। सभी संस्कृतियों को विकास के चरणों में वर्गीकृत करना लगभग असंभव था। इसके अलावा, आर्मचेयर मानवविज्ञान और जातीयतावाद को बढ़ावा देने के कारण इसकी आलोचना की गई थी। इसी संदर्भ में प्रकार्यवाद का उदय हुआ। इसने मूल निवासियों की भाषा सीखकर गहन और लंबे क्षेत्रकार्य आयोजित करके समाजों का अध्ययन करने की बात की। इसने समाज का अध्ययन करने के लिए जैविक सादृश्य के विचार को बढ़ावा दिया। हर्बर्ट स्पेंसर के बाद, प्रकार्यवादियों का मानना था कि समाजों का अध्ययन मानव जीव की तरह ही किया जाना चाहिए। जिस प्रकार मानव शरीर में विभिन्न अंग होते हैं जो संपूर्ण को बनाए रखने के लिए कार्य करते हैं, उसी तरह, समाज में विभिन्न संस्थाएं होती हैं जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए मिलकर काम करती हैं। यही कार्यात्मक एकता की अवधारणा है। समाजों को इस सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य के भीतर ही स्थिर संस्थाओं के रूप में माना गया था। "1930 और 1955 के बीच इस (क्रियात्मक)

संप्रदाय द्वारा दिया गया योगदान यूरोपीय, विशेषकर अंग्रेज़ी प्रदेशों में स्थित अफ्रीकी आदिवासी समाजों में किए गए क्षेत्रकार्य पर आधारित था। ऐसी परिस्थितियों में इस स्कूल के सदस्यों के प्रायोजन, रोजगार और अप्रत्यक्ष सहयोग के साथ, सामाजिक प्रणालियों के अध्ययन के प्रस्ताव के बीच संबंध बनाना असंभव नहीं है। उदाहरण के लिए; जैसे कि वे एकान्त में थे और जैसे कि वे कालातीत थे और अब समाप्त हो चुकी औपनिवेशिक व्यवस्था के साथ (हैरिस, 1968: 516) रहते थे। समाजों और उनमें परस्पर महत्त्वपूर्ण विरोधाभास एवं मतभेद थे परंतु कार्यात्मक एकता की अवधारणा को आगे बढ़ाने के लिए उनको अनदेखा कर दिया जाता था।

ब्रिटिश उपनिवेशों ने विभिन्न समाजों और संस्कृतियों का अध्ययन न केवल सिद्धांत बनाने के लिए किया बल्कि उनका अध्ययन इस लिए भी किया ताकि ब्रिटिश प्रशासक नीतियां बना सकें। रैडक्लिफ ब्राउन ने अपनी पुस्तक–*अफ्रीकन सिस्टम्स ऑफ किनशिप एंड मैरेज* की प्रस्तावना में लिखा है कि "इस पुस्तक को मात्र मानव विज्ञानियों द्वारा ही नहीं पढ़ा जाएगा, अपितु कुछ ऐसे लोगों द्वारा भी पढ़ा जाएगा जो अफ्रीकन महाद्वीप में औपनिवेशिक सरकारों के लिए नीतियों को सूत्रबद्ध अथवा क्रियान्वयन करने के लिए ज़िम्मेदार हैं"। यह स्पष्ट है कि मानवशास्त्रीय ज्ञान का सृजन औपनिवेशिक प्रणालियों और दृष्टिकोणों द्वारा निर्देशित और सीमित था। हम ब्रिटिश उपनिवेशों, विशेषकर अफ्रीका में राजनीतिक संगठनों के अध्ययन से एक और उदाहरण ले सकते हैं। 1940 में, मेयर फोर्ट्स और इवांस–प्रिचर्ड ने अफ्रीकी राजनीतिक प्रणालियों पर एक पुस्तक का संपादन किया। यह पुस्तक बड़े पैमाने पर राजनीतिक व्यवस्था के एक समकालिक दृष्टिकोण से संबंधित थी और इसका उद्देश्य पश्चिम में प्रशासकों के पेशेवर दर्शकों के लिए था। अफ्रीका में जनजातीय समुदायों के बीच राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन अन्य संस्थानों जैसे नातेदारी, आर्थिक और धर्म के हिस्से के रूप में किया गया। नृवंशविज्ञान (एथेनोग्राफी) पर ध्यान केंद्रित करने की विधि ने राजनीतिक व्यवस्था के ऐतिहासिक और संबंधपरक आयामों को लगभग पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया था। मार्विन हैरिस (1968) लिखते हैं– "लगभग साढ़े तीन सौ सालों तक "काला महाद्वीप" का उपयोग सस्ते और सीधे–साधे श्रमिकों को पैदा करने की धरती के रूप में होता रहा। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि चार सौ लाख अफ्रीकी किसी न किसी तरह से गुलामों के व्यापार का शिकार बने, हालांकि उनमें से थोड़े से ही, संभवतः मात्र एक सौ चालीस लाख ही उनमें समुद्र पार के अपने गंतव्य स्थानों तक जीवित पहुँच पाये। इस विपत्ति में फँसने से पहले उन्हे युद्धोत्तर प्रभावों, प्रवासों, राजनैतिक उथल–पुथल एवं विस्तृत जनसांख्यिकीय परिवर्तनों से गुजरना पड़ा था। इस प्रकार के संदर्भ में, अनुभववाद के नाम पर 1930 के दशक के एथनोग्राफी पर प्रतिबंध वर्तमान तक सीमित होना, प्रशंसा करने योग्य नहीं है(पृ.सं. 536)"। उस प्रकार के मानव वैज्ञानिक कार्य औपनिवेशिक स्वामियों के प्रयोजनों को सिद्ध करने तक ही सीमित थे तथा उन्होने संपूर्णतः उन कठिनाईयों एवं अत्याचारों को अनदेखा किया जिसका सामना उपनिवेशवाद के नाम पर लोगों ने किया।

अपनी प्रगति जांचें

4) रैडक्लिफ ब्राउन की कौन सी प्रसिद्ध पुस्तक अफ्रीका में औपनिवेशिक नीतियों के निर्माण के बारे में बात करती है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 संपर्क मानवविज्ञान, संस्कृति परिवर्तन एवं नैतिकताः एक व्यावहारिक मानवविज्ञानी के रूप में मलिनोवस्की का परीक्षण

मानवविज्ञान की शुरुआत परिवर्तन के अध्ययन से हुई। विकासवादी इस बात से चिंतित थे कि समाज एक चरण से दूसरे चरण में कैसे बदलता है। हालांकि, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, शास्त्रीय विकासवाद अनुमान लगाने और आर्मचेयर मानवविज्ञान को बढ़ावा देने के कारण प्रसिद्ध नही हुआ। इस कमी को बाद के सैद्धांतिक सूत्रीकरण और मानवविज्ञान में प्रतिमान में सुधारा गया था जिसे हम प्रकार्यात्मकता के रूप में जानते हैं। इसने समाज के एक समकालिक अध्ययन को बढ़ावा दिया जिसका अर्थ है तत्क्षण रूप(यहाँ और अभी) में समाज का अध्ययन करना था। मालिनोवस्की कार्यात्मक दृष्टिकोण और समकालिक अध्ययन के अग्रणी बन गए। उन्होंने प्रकार्यवादी परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय समाजों को उनकी समग्रता में जानने में अधिक रुचि दिखाई। हालांकि, यह कल्पना करना गलत होगा कि प्रकार्यवादियों के बीच परिवर्तन की अवधारणा पूरी तरह से अनुपस्थित थी। 1929 और 1943 के बीच मालिनोवस्की ने संस्कृति परिवर्तन पर कई लेख लिखे। इन लेखों को उनके एक छात्र द्वारा एक पुस्तक के रूप में एक साथ रखा गया और 1945 में *द डायनेमिक्स ऑफ कल्चर चेंज* के रूप में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक में मालिनोवस्की ने 'संपर्क मानव विज्ञानियों' की भूमिका के बारे में बात की, जिसका अर्थ यह है कि वह मानवविज्ञानी संस्कृति संपर्क के अध्ययन में शामिल थे। औपनिवेशक एवं उपनिवेशित संस्कृतियों के बीच संपर्क के कारण, परिवर्तन होना निश्चित था। मालिनोवस्की के अनुसार, तब यह मानव विज्ञानियों का उत्तरदायित्त्व था कि वह इस प्रकार के परिवर्तन को सुगम बनाएँ ताकि दोनों संस्कृतियों के बीच एक प्रकार के समझौते की परिस्थिति तक पहुंचा जा सके। मानवविज्ञानी उपनिवेशकों को सांस्कृतिक संस्थानों की एक सम्पूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करते हुए अपना वैज्ञानिक योगदान देने की अपनी जिम्मेदारियों में बंधे हुए थे, ताकि उपनिवेशकों एवं उपनिवेशितों के बीच एक 'परस्पर लाभदायक सामंजस्य' तक पहुंचा जा सके(हैरिस, 1968)।

मालिनोवस्की ने 'प्रायौगिक मानवविज्ञानियों' के लिए नैतिक संहिता का प्रारूप भी तैयार किया जिसमें 'समभाव, समझौता एवं नागरिक सेवा शिष्टाचार' शामिल थे। उन्होंने इसका श्रेणीबद्ध तरीके से उल्लेख किया कि वे मानव वैज्ञानिक जिन्होंने संस्कृति संपर्क का अध्ययन किया है, उनकी यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वह अपनी खोजों को इस प्रकार से प्रस्तुत करें जिससे नीति निर्माण करने वालों को सहायता मिले। वह आगे कहते हैं कि स्थानीय लोगों की वकालत करना मानव विज्ञानियों की ज़िम्मेदारी बनती है परंतु वह इससे अधिक और कुछ नहीं कर सकता तथा निर्णय नीति निर्माण करने वाले एवं जो सरकार में हैं उनके द्वारा लिए जाएंगे। वह आगे संपर्क नृजातीय वैज्ञानिकों द्वारा किए जाने वाले कामों का भी प्रारूप तैयार करते है – एक व्यावहारिक विशेषज्ञ के रूप में होते हुए "सम्मिलित सभी कारकों के बारे में सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश में दूरदर्शिता एवं भविष्यवाणी करने तथा असंन्या प्रश्नों पर

निपुणता के साथ सलाह देने की क्षमता रखना (हैरिस, 1968:557)"। हैरिस ने तर्क दिया कि एक व्यावहारिक विशेषज्ञ के रूप में कार्य करना तथा प्रशासकों को शासन चलाने में आवश्यक ज्ञान उपलब्ध करवाना मानव विज्ञानियों को अपने नैतिक मूल्यों से मुक्ति नहीं दिला सकता। इसके अतिरिक्त, दो संस्कृतियों के बीच जिस 'समझौते' की बात की जा रही है, वह सदैव अधिक शक्तिशाली के पक्ष होगा तथा कभी भी सह–संवेदी नहीं हो सकता। यह इस दृष्टिकोण से भी अनैतिक है कि किस प्रकार के समझौते की बात की जा रही है? यह कुछ ऐसा है जैसे मानवविज्ञानी शोषित एवं वंचितों को समभाव का उपदेश देना चाहते हैं। क्या कभी दशकों एवं शताब्दियों से एक साथ उत्पीड़न झेल रहे लोगों के साथ समझौते के बारे बात की जा सकती है? इसके लिए मलिनोवस्की ने कार्यात्मकता एवं मानवविज्ञान के प्रायौगिक मूल्य का प्रारूप तैयार किया, जब वह कहते हैं कि –"उस प्रकार के सिद्धान्त (कार्यात्मकता) का प्रायौगिक मूल्य यह है कि यह हमें विभिन्न रिवाजों के सापेक्ष महत्त्व के बारे में यह सिखाता है कि कैसे वह एक दूसरे के साथ सामंजस्य स्थापित करते हैं, किस प्रकार धर्म–प्रचारकों, उपनिवेशी प्राधिकरणों तथा वह जिन्हे जंगली व्यापार एवं जंगली श्रमिकों का आर्थिक शोषण करना है, द्वारा उनसे साथ किस प्रकार व्यवहार करना है"(मलिनोवस्की 1927:40–41)। इस कथन से स्पष्ट है कि प्रकार्यवाद के सिद्धांत का व्यावहारिक मूल्य जंगली व्यापार और श्रम का शोषण करना था। इस प्रकार मानवविज्ञान को मिशनरियों और औपनिवेशिक अधिकारियों की सहायता के लिए उपयोग किया जाना था। अंत में, यह कहा जा सकता है कि मालिनोवस्की को मानवशास्त्रीय ज्ञान के अनुप्रयोग के साथ–साथ नैतिक मुद्दों का बोझ उठाना पड़ा (हैरिस, 1968)।

अपनी प्रगति जांचें

5) अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में मालिनवोस्की के विचार से जुड़े नैतिक मुद्दे क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान, द्वितीय विश्व युद्ध एवं नैतिकता

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान युद्ध प्रयासों में मानव विज्ञानियों को अपने विशेष ज्ञान का योगदान करने के लिए आह्वान किया गया। विषय से सामीप्य के कारण एवं विश्वभर से विभिन्न क्षेत्रों के बारे में एकत्रित किए गए गहन ज्ञान ने उन्हें युद्ध के दौरान अति–महत्त्वपूर्ण बना दिया। उनका आह्वान मूलतः शत्रु देशों की संस्कृतियों एवं उनके राष्ट्रीय चरित्र को जानने के लिए किया गया था ताकि युद्ध को मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी लड़ा जा सके। उनके ज्ञान को युद्धोत्तर काल में पुनर्वास कार्यक्रमों के आयोजन में भी उपयोग किया गया। युद्ध प्रयासों में मानव वैज्ञानिक योगदानों ने सांस्कृतिक ज्ञान एवं मानव वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग को युद्ध प्रयासों का संचालन करने तथा उन्हें बनाए रखने के कारण गंभीर नैतिक मुद्दों जन्म दिया। आमतौर पर यह कहा जाता है

कि युद्ध बंदूकों और पुस्तकों, दोनों के साथ लड़ा गया था। मानव वैज्ञानिक ज्ञान को सैन्य नीति निर्माण के स्तर पर उपयोग किया गया था।

विद्वानों ने नाजियों के अधीन मानवविज्ञान और जर्मन युद्ध प्रयासों के बीच की कड़ी को समझने की कोशिश की है। इस मुद्दे पर काम करने वाले रॉबर्ट प्रॉक्टर के अनुसार, नाजी जर्मन और मानवविज्ञान के बीच एक महान संबंध था। केवल कुछ मानवविज्ञानी थे जो नस्लीय विज्ञान के विचार के विरोध में थे क्योंकि यह नाजी शासन द्वारा नियोजित किया गया था। प्रॉक्टर ने यह भी पाया कि केवल मुट्ठी भर मानवविज्ञानियों ने जर्मनी से यहूदियों के निष्कासन का विरोध किया। कुछ गैर–जर्मन मानवविज्ञानी भी नस्लीय पदानुक्रमों पर विचार रखते थे और नाजियों के साथ तालमेल रखते थे। उदाहरण के लिए, ई. ए. हूटन निरंतर यह कहते रहे कि भविष्य की पीढ़ियों में यदि अच्छे प्रजातीय गुण बनाए रखने के लिए, हमें राष्ट्रीय प्रजनन विभाग की आवश्यकता है, जो इस बात की राय दे कि कौन किसके साथ प्रजनन करे। कुछ ऐसे यूरोपीय मानवविज्ञानी भी थे जो इवान्स प्रिचार्ड एवं एस. एफ. नाडेल की तरह युद्ध प्रयासों में शामिल हो गए(प्राइस, 2002)।

जहां तक द्वितीय विश्व युद्ध की धारणा का संबंध था, अमेरिका में स्थिति थोड़ी भिन्न थी। युद्ध को 'अच्छे' के रूप में देखा गया क्योंकि इसे नाजी जर्मनी के खिलाफ निर्देशित किया गया था। मानवशास्त्रीय विचार भी नस्ल की बोसियन समझ से प्रभावित थे जो किसी श्रेणीबद्ध समझ पर आधारित नहीं थी। नाजियों को मानवविज्ञान के मूल सिद्धांतों का दुश्मन माना जाता था। मानवविज्ञानी युद्ध के प्रयासों में अमेरिकी सरकार की मदद को एक वीरतापूर्ण कार्य मानते थे। जैक हैरिस जैसे मानव विज्ञानियों ने पश्चिम अफ्रीका में ऑफिस ऑफ स्ट्रेटेजिक सर्विसेस के लिए खूफिया जानकारियाँ एकत्रित करना आरंभ कर दिया, जिसे अब सी.आई.ए. के रूप में जाना जाता है। वह एक मानववैज्ञानिक क्षेत्र कार्यकर्ता बनकर वहाँ गये, हालांकि उसका मुख्य कार्य खूफिया जानकारी जुटाना था। यह भी एक तथ्य है कि अमरीका में कुछ मानवविज्ञानी युद्ध प्रयासों में मानव वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग की अवधारणा के विरुद्ध थे। ऐसी आवाज़ों को हालांकि सरलता के साथ अनदेखा कर दिया जाता था। अमेरीकन एंथ्रोपोलोजिकल एसोशिएशन (एएए) ने एक प्रस्ताव पारित किया कि मानवविज्ञानी एवं उनका ज्ञान युद्ध प्रयासों के लिए सरकार की सेवार्थ उपलब्ध रहेगा। फ्रेड एगन उस समय एएए के सचिव थे तथा उसने यह सूचित किया कि 1943 तक आधे से अधिक मानवविज्ञानी अमरीका में प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का समर्थन कर रहे थे एवं अन्य आधे किसी न किसी अन्य रूप में युद्ध प्रयासों में योगदान कर रहे थे(प्राइस, 2002)।

रूथ बेनेडिक्ट द्वारा किया गया इस प्रकार का एक अध्ययन यहाँ उल्लेख करने योग्य है। युद्ध जानकारी के स. रा. कार्यालय ने उन्हे जापानी संस्कृति पर एक अध्ययन करने के लिए कहा था ताकि जापान में अपने अमरीकी आधिपत्य की परिस्थिति में उन्हे प्रशासित करना सरल हो सके। वह जापानी संस्कृति, उनके सोचने के तरीकों तथा समस्त व्यक्तित्त्व के बारे में जानना चाहते थे। मस्तिष्क में इन उद्देश्यों को लेकर बेनेडिक्ट ने अमरीका में जापानी युद्ध बंदियों पर अध्ययन किया। इस प्रकार के अध्ययन को 'दूरस्थ संस्कृति' का अध्ययन करने के रूप में जाना गया। उनका यह अध्ययन एक पुस्तक में परिणत हुआ, जिसका शीर्षक था –*क्रिसेंथेमम एंड द स्वोर्ड।*

यह जापानी संस्कृति एवं व्यक्तित्त्व पर आधारित आज तक की सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तकों में से एक है(प्राइस, 2002)।

हालांकि, जैसा की पहले उल्लेख किया जा चुका है, कुछ मानवविज्ञानी, मानव विज्ञानियों द्वारा युद्ध को समर्थन करने की अवधारणा के साथ सहज नहीं थे। वह इस प्रकार की संधि से जुड़े नैतिक मुद्दों के बारे अधिक चिंतित थे। उन्होने इस संदर्भ में मानव विज्ञानियों की भूमिका की आलोचना की। यह एम. जे. हर्स्कोविट्स ही थे जिन्होंने मानव विज्ञानियों द्वारा उस स्थान पर लोगों के विरुद्ध अपने ज्ञान के उपयोग से जुड़े नैतिक मुद्दों को उठाया, जहां पर वह अपने क्षेत्रकार्य का संचालन करते थे। उनका मत था कि चूंकि वैज्ञानिक एवं लोग किसी विशेष राष्ट्रीयता से संबंध रखते हैं, उनके उस राष्ट्र के प्रति कुछ उत्तरदायित्त्व बनते हैं। बहरहाल, वह मानवविज्ञानी उन लोगों के प्रति भी अत्यधिक ऋणी होते हैं जिनसे वह आंकड़े एकत्रित करते हैं, शोध प्रबंध लिखते हैं तथा अपने विषय तथा राष्ट्र में प्रसिद्धि पाते हैं(प्राइस, 2002)।

फ्रांज़ बोआस, जो अमरीका में प्रमुख मानव विज्ञानियों में से एक थे, मानव विज्ञानियों द्वारा संयुक्त राष्ट्रों के युद्ध प्रयासों के समर्थन करने की अवधारणा के विरुद्ध थे। वह विशेष रूप से उस अवधारणा के विरुद्ध थे जिसके अंतर्गत मानवविज्ञानी मानव वैज्ञानिक शोधकार्य का संचालन करने की आड़ में जासूसी के कार्य में संलिप्त थे। उन्होंने यहां तक कहा कि उस प्रकार के मानव विज्ञानियों को स्वयं को वैज्ञानिक नहीं कहना चाहिए(फेरेरो एवं एंड्रेत्ता, 2014)।

अपनी प्रगति जांचें

6) द्वितीय विश्व युद्ध के संदर्भ में अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता की विवेचना कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

35 कैमलोट परियोजना एवं मानव भू–भाग प्रणाली

कैमलोट परियोजना एवं मानव भू–भाग प्रणाली बहुत निकटता के साथ अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में सम्मिलित नैतिक मुद्दों के साथ संबन्धित हैं। 1964–65 के दौरान, सं. रा. सेना ने छह मिलियन यूएस डॉलर वाली एक परियोजना को वित्त–समर्थन दिया जिसे 'कैमलोट परियोजना' के नाम से जाना जाता है। इस परियोजना का उद्देश्य था रणनीतिक क्षेत्रों में क्षेत्रकार्य का संचालन करना एवं उन क्षेत्रों एवं प्रान्तों में हो रही संभावित क्रांतियों के बारे में आंकड़े एकत्रित करना जहां पर सं. रा. सेना तथा सं. रा. सरकार की रणनीतिक दिलचस्पियाँ हैं। एशिया, लैटिन अमरीका, अफ्रीका तथा यूरोप इन प्रान्तों में शामिल हैं। इस परियोजना के अंतर्गत सं. रा. में रहने वाले अनेक प्रसिद्ध मानव विज्ञानियों की सेवाओं को लिया जाना था। कुछ सरकारें उनके देशों में आने वाली इस परियोजना के बारे में जानने के लिए अत्यधिक आतुर थी चूंकि, इसने प्रत्यक्ष रूप से उनकी संप्रभुता को प्रभावित किया था। उदाहरण के लिए चिली देश ने

इस परियोजना को अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप की दृष्टि से देखा। इसी परियोजना में शामिल इन प्रतिरोधों एवं नैतिकता के मुद्दों के कारण, जैसे ही इस परियोजना के निदेशक की नियुक्ति हुई, वैसे ही इस परियोजना को बंद कर दिया गया। हालांकि, इस परियोजना ने मानवविज्ञान विषय के लिए कुछ परिणाम प्रस्तुत किए। इस परियोजना के औचित्य एवं मानव विज्ञानियों को यह विश्वास दिलाने के लिए भ्रमित किया गया कि इस परियोजना का उद्देश्य एक वैज्ञानिक अध्ययन करना था, जिससे जुड़े मुद्दों के इर्द–गिर्द मानवविज्ञान के अंदर ही एक बहस चल पड़ी। मानवविज्ञानियों को इस तर्क के साथ विश्वास दिलाया गया कि परियोजना सामाजिक मुद्दों पर महत्वपूर्ण डेटा एकत्र करने के लिए थी और इससे किसी भी तरह से राष्ट्रों की आंतरिक संप्रभुता को प्रभावित नहीं होगी। चाहे जो भी परिस्थिति रही हो, इस परियोजना ने मानवविज्ञान के विषय एवं मानव विज्ञानियों के काम की प्रकृति के संबंध में लोगों की अनुभूति में परिवर्तन ला दिया। सभी प्रकार के मानव वैज्ञानिक कार्यों को अब संदेह की दृष्टि से देखा जाने लगा था। मानव विज्ञानियों को अब सीआईए एवं सं. रा. सेना के जासूसों के रूप में देखा जाता था। विश्वभर में विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रकार्य कर रहे मानव विज्ञानियों को सरकारों के सामने यह सिद्ध करने एवं उन्हे मनाने में अत्यंत कठिनायियों का सामना करना पड़ा कि उनके द्वारा किए जा रहे शोधकार्य का किसी भी प्रकार से सं. रा. जासूसी से कोई संबंध नहीं है(फेरेरो एवं एंड्रेत्ता, 2014)।

एक अन्य दिलचस्प मामला मानव भू–भाग प्रणाली से संबन्धित है। सितंबर 11, 2001 में जब विश्व व्यापार केंद्र की जुड़वां इमारतें ध्वस्त हो गईं, तब मध्य पूर्व देशों में काम कर रहे मानव विज्ञानियों की भूमिका एवं उत्तरदायित्त्वों में परिवर्तन आया। मध्य पूर्व में कार्यरत मानव विज्ञानियों के लिए एक नए युग की शुरुआत हुई। अब उन्हे सं. रा. सेना की सैन्य जासूसी विभाग द्वारा एक परियोजना के अंतर्गत रोजगार मिलने लगा जिसका नाम था मानव भू–भाग प्रणाली (एचटीएस)। मध्य पूर्व में सं. रा. सेना द्वारा चलाये जा रहे सैन्य अभियानों में सहायता करने के लिए, सैन्य कमांडरों को क्षेत्र, लोग एवं उनकी भाषा को जानने में सहायता तथा मदद करने के लिए मानव विज्ञानियों को वहाँ रखा जाना लगा जहां पर सैन्य अभियान चल रहे होते थे। एचटीएस का बजट इसकी उत्पत्ति के बाद से ही निरंतर बढ़ता रहा तथा 2010 तक, एचटीएस का वार्षिक बजट 150 मिलियन यूएस डॉलर तक आ पहुंचा था तथा इस प्रणाली के अंतर्गत 31 दलों का गठन किया जा चुका था। एचटीएस मात्र मध्य पूर्व तक ही सीमित नहीं है अपितु अब इसका विस्तार लगभग उन सभी क्षेत्रों में हो चुका है जहां पर भी सं. रा. सेना को उनकी आवश्यकता होती है(फेरेरो एवं एंड्रेत्ता,, 2014)।

इस प्रकार की परियोजनाओं की मानवविज्ञान से जुड़ी व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा आलोचना की गयी। सोसाइटी फॉर ऐप्लाइड एंथ्रोपोलोजी (एसएफएए) एवं अमेरीकन एंथ्रोपोलोजिकल एसोशिएशन (एएए), दोनों ने ही युद्ध प्रयासों के साथ जुड़े हुए मानव विज्ञानियों की आलोचना की। उनका मत है कि उस प्रकार की संलिप्तताएँ नैतिक संहिता एवं व्यावहारिक मानवविज्ञान की व्यावसायिक संहिताओं का उल्लंघन करती हैं। मानव विज्ञानियों के कुछ ऐसे समूह भी हैं जो इस प्रकार के प्रयासों का समर्थन करते हैं, चूंकि उनका मत है कि उस प्रकार के प्रयासों से युद्ध कर रहे दो पक्षों के बीच शांति वार्ताओं की परिस्थिति बनाई जा सकती है, यदि वह एक दूसरे को अच्छे ढंग से समझते हों। इस प्रकार के मानवविज्ञानी उन प्रयासों को सांस्कृतिक बातचीत के रूप में देखते हैं। तर्क चाहे जो भी हो, मानव विज्ञानियों ने अपनी संलिप्तताओं एवं उस

प्रकार के मुद्दों पर हो रही चर्चाओं से महत्त्वपूर्ण सबक सीख लिए थे। उन्होंने वित्त–पोषण करने वाली एवं उन्हें काम पर रखने वाली उन संस्थाओं के उद्देश्यों के संबंध में अधिक जागरूक एवं सावधान रहना सीखा जो उनकी विशेषज्ञता का उपयोग क्षेत्र अध्ययनों के लिए करना चाहती थी। नैतिकता के इर्द–गिर्द होने वाली इन चर्चाओं ने इस विषय में एक कशमकश वाली प्रक्रिया को जन्म दिया है, जिसने मानव विज्ञानियों को अपने हस्त–कौशल के लिए अधिक प्रतिबद्ध करने तथा अपने काम एवं कौशल के उपयुक्त उपयोग के प्रति अधिक जागरूक बना दिया है। इसके साथ ही हम अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिक जिम्मेदारियों के प्रमुख क्षेत्रों पर चर्चा करने की ओर बढ़ आए हैं(फेरेरो एवं एंड्रेत्ता, 2014)।

अपनी प्रगति जांचें

7. कैमलोट परियोजना एवं मानव भू–भाग(टेरेन) प्रणाली क्या है? अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में व्याप्त नैतिक मुद्दों के साथ उनका क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान में नैतिकता का वर्णन एवं व्यावसायिक उत्तरदायित्व

सोसायटी फॉर एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी (SfAA) ने अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानियो के नैतिक उत्तरदायित्वों के प्रमुख क्षेत्रों का प्रारूप तैयार किया है। यह नैतिक संहिताएँ कुछ अन्य संगठनों के साथ भी संबन्धित हैं जो नैतिक उत्तरदायित्वों के क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, जैसे अमेरिकन एंथ्रोपोलाजी एसोसिएशन। नैतिक उत्तरदायित्वों के क्षेत्रों में निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

1. *अध्ययन के अंतर्गत लोगों के प्रति उत्तरदायित्वः* मानवविज्ञानियों की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी उन लोगों के प्रति होती है जिनका वे अध्ययन करते हैं। लोग किसी भी प्रकार के मानवविज्ञान अनुसंधान और अनुप्रयोग के केंद्र में हैं। लोगों के हितों की रक्षा करना उनका पहला और सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य है। लोगों के शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण की रक्षा करने की आवश्यकता है। यह मानवविज्ञान में समग्रता के विचार के साथ प्रतिध्वनित होता है। जैसा कि विषय एक समग्र समझ के लिए कहता है, नैतिकता भी लोगों के समग्र कल्याण की ओर निर्देशित होती है। उनकी भलाई की रक्षा के लिए, मानवविज्ञानी का यह कर्तव्य है कि वे अपने शोध के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से बताएं और लोगों के साथ अनुसंधान और उसके आवेदन के इच्छित और अनपेक्षित परिणामों के बारे में भी बात करें। जब वह ऐसा करेंगे, तभी लोग शोधकार्य में अपनी भागीदारी अथवा गैर–भागीदारी के संबंध में निर्णय लेने की एक बेहतर परिस्थिति में होंगे। इसका अर्थ यह निकलता है कि लोगों की भागीदारी सदैव स्वैच्छिक होना चाहिए तथा लोग सूचित विकल्पों का चयन करने

की तथा अपनी भागीदारी के संबंध में सूचित सहमति देने की परिस्थिति में होने चाहिए। यह सुनिश्चित करना मानव विज्ञानियों की ज़िम्मेदारी बनती है कि शोधकार्य में शामिल सूचनाप्रदाताओं एवं सहभागियों का कभी शोषण नहीं होना चाहिए तथा किसी भी कीमत पर उनके अधिकार संरक्षित रहने चाहिए। सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि मानव विज्ञानियों को शोधकार्य प्रक्रिया के दौरान सहभागियों को अपनी गोपनियता बनाए रखने के सभी साधन तथा शोधकार्य के प्रकाशन के समय परियोजना रिपोर्ट, लेख तथा पुस्तकों को उपलब्ध करवाना चाहिए। "जिन लोगों का हम अध्ययन करते हैं, उन्हें गोपनियता की सभी संभव सीमाओं के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए तथा हमारे अपने संबन्धित देशों में वर्तमान की कानूनी परिस्थितियों में वास्तविक रूप से संभव गोपनियता से आगे बढ़कर किसी प्रकार की की वचनबद्धता नहीं दिखानी चाहिए(एसएफएए वेबसाइट)"। यह भी मानव विज्ञानियों की ही ज़िम्मेदारी बनती है कि वह लोगों के समक्ष परियोजनाओं के लक्ष्यों, विधियों एवं वित्त–पोषण के बारे खुलासा करें। अपने ज्ञान की सीमाओं में रहते हुए हमें क्षेत्र में अपनी गतिविधियों से जुड़े हुए महत्त्वपूर्ण जोखिम का भी खुलासा करना चाहिए।

2. *हमारे कार्यों से प्रभावित हुई जनता एवं समुदायों के प्रति उत्तरदायित्वः* मानव विज्ञानियों को अपनी गतिविधियों से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होने वाले समुदायों की मर्यादा, अखंडता एवं महत्त्व का सम्मान करना चाहिए। इस बात को भी मान्यता प्रदान की जानी चाहिए कि मानव से संबन्धित सांस्कृतिक एवं भौतिक विविधता का महत्त्व सर्वोच्च है इसलिए मानव वैज्ञानिक कार्य को इस आयाम की अनदेखी नहीं करना चाहिए। सम्पूर्ण मानव अस्तित्व मानव विविधता पर निर्भर है इसलिए मानव विज्ञानियों कोई सदैव इसकी रक्षा के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। मानव विज्ञानियों को वित्त–पोषण करने वाली संस्थाओं की ओर से कार्रवाई करने एवं संस्तुति करने से बचना चाहिए, जो कि समुदायों के लिए हानिकारक हो सकती है। अपनी खोजों को समुदाय में प्रसारित एवं साझा करने की भी ज़िम्मेदारी मानव विज्ञानियों की बनती है। ऐसा करना पारदर्शिता को बढ़ावा देता है तथा इससे मानव विज्ञानियों एवं समुदाय के सदस्यों के बीच विश्वास का निर्माण होता है। यह समुदाय के सदस्यों को भी अपने क्षेत्रों एवं विशिष्ट समस्याओं के लिए नीतियों के सूत्रीकरण में अधिक बड़ी भूमिका निभाने में सहायता करता है।

3. *मानवविज्ञान में विषय एवं अन्य सहकर्मियों के प्रति उत्तरदायित्वः* एक व्यावसायिक मानव विज्ञानी के रूप में, विषय एवं हमारे सहकर्मियों के प्रति हमारा एक उत्तरदायित्त्व बनता है। हमें ऐसी किसी गतिविधि में नहीं लिप्त होना चाहिए जो इस विषय की तथा इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हमारे अन्य सहकर्मियों की मर्यादा को भंग करे। इसे युद्ध में तथा द्वितीय विश्व युद्धोत्तर परिदृश्य में भी निभाई गयी मानव विज्ञानियों की भूमिका के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। इसका अर्थ यह है कि हमें अपने अध्ययन द्वारा जनित जानकारी एवं परिणामों के यथासमय प्रवाह को बाधित करने वाला कोई काम नहीं करना चाहिए। ऐसा करना वर्तमान में चल रहे एवं भविष्य में किए जाने वाले शोधकार्यों को प्रभावित कर सकता है। मानव विज्ञानियों को वित्त–पोषण करने वाली संस्थाओं लिए अपनी प्रतिबद्धता तथा उन संदर्भ की शर्तों एवं नियमों जिनसे वे अनुबंधित हैं, के साथ–साथ इस उत्तरदायित्त्व को भी समझना चाहिये। हमें उन व्यावसायिक आदतों के लिए भी

आवाज़ उठानी चाहिए जिन्हें हमने शोधकार्य के दौरान धारण किया, चूंकि यह बातें चीजों को परिप्रेक्ष्य में रखने में सहायता प्रदान करती हैं। इसका अर्थ है कि कार्यक्षेत्र में काम कर रहे दूसरे लोगों के लिए आंकड़े एकत्रित करने की विधियों एवं तरीकों को स्पष्ट रूप से साझा करना एवं बताना अति आवश्यक है। मानव विज्ञानियों को उसी मुद्दे पर काम कर रहे अन्य मानव विज्ञानियों को मान्यता एवं श्रेय देने की भी नैतिक ज़िम्मेदारी होती है। सभी के द्वारा किए गये योगदान को विधिवत रूप से स्वीकृत किया जाना चाहिए तथा उसका श्रेय दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार हमें अपने किसी व्यक्तिगत लाभ के लिए अपने सहकर्मियों के बारे में अपयश अथवा रूढ़िवादिता एवं पूर्वाग्रह फैलाने में संलिप्त नहीं होना चाहिए। यह विशेषकर व्यावहारिक मानव विज्ञानियों के मामले में शत प्रतिशत सत्य है। चूंकि जोखिम अत्यधिक होता है, और नीतियों में परिवर्तन लाने में अथवा विकास लाने में मानव वैज्ञानिक कार्य का प्रभाव चिरस्मरणीय हो सकता है।

4. *विद्यार्थियों, शिक्षार्थियों एवं प्रशिक्षुओं के प्रति उत्तरदायित्वः* अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान का एक बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम छात्रों और अन्य लोगों को प्रशिक्षण प्रदान करना है जो अनुसंधान करने के शिल्प को सीखने में रुचि रखते हैं और तत्काल समस्याओं को हल करने के लिए मानवशास्त्रीय ज्ञान का उपयोग करते हैं। इस प्रकार का प्रशिक्षण बिना किसी प्रकार के भेदभाव के सभी को उपलब्ध होना चाहिए। प्रशिक्षण का कार्य सूचित, सटीक एवं समाज की आवश्यकताओं में सुसंगत होना चाहिए। हमारे अपने व्यवसाय से संबंध रखने वाले हमारे सहकर्मियों को प्रशिक्षित होने की आवश्यकता हो सकती है। इस आवश्यकता का आभास किया जाना चाहिए तथा शिक्षा को प्रारम्भ करने के आयाम को सर्वोच महत्त्व दिया जाना चाहिए। हम सभी को अपने कौशल एवं ज्ञान को पोषित करते रहना चाहिए तथा और अधिक कौशल प्राप्त करने एवं अपने ज्ञान के स्तर को निरंतर बढ़ाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। इसे प्रशिक्षण कार्य में एक महत्त्वपूर्ण आयाम समझा जाना चाहिए। प्रशिक्षण में नैतिक मुद्दों से संबन्धित महत्त्वपूर्ण एवं पर्याप्त घटक भी होने चाहिए। इसे विषय एवं अपने सहकर्मियों के लिए अपनी प्रतिबद्धताओं का अनुसरण करते हुए, हमें शोधकार्य एवं प्रकाशन, दोनों स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा दिये गए योगदान को विधिवत रूप से स्वीकार करना चाहिए। अपने विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए मानव विज्ञानियों को गैर–शोषक ढंग से व्यवहार करना चाहिए।

5. *कर्मचारियों, प्रायोजकों एवं वित्त–पोषक संस्थाओं के प्रति उत्तरदायित्वः* अधिकतर अनुप्रयुक्त मानवविज्ञान किसी न किसी वित्त–पोषण अथवा प्रायोजन के अंतर्गत ही होता है। इसलिए मानवविज्ञानी वित्त–पोषक संस्था के लिए वित्त का उपयुक्तढंग से उपयोग करने हेतु तथा शोधकार्य का संचालन ईमानदारी से करने एवं अपनी खोजों को प्रेषित करने के लिए उत्तरदायी होते हैं। परियोजना का निश्चित समायावधि में ही सम्पन्न होना भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होता है। चूंकि, व्यावहारिक परियोजनाओं के अंतर्गत निश्चित समायावधि में ही किसी प्रकार के निर्दिष्ट परिवर्तन के कारकों द्वारा हस्तक्षेप अथवा शुरुआत करने की आवश्यकता होती है। इसलिए व्यावसायिक ज़िम्मेदारियों की प्रकृति एवं विस्तार का स्पष्ट रूप से प्रारूप तैयार कर लेना चाहिए तथा नियोक्ता अथवा प्रायोजक के साथ इस पर चर्चा की जानी चाहिए। कुछ निश्चित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को अनुकूल बनाने के लिए तथ्यों

का दमन एवं परिणामों से छेड़छाड़ कदापि नहीं करना चाहिए। मानव विज्ञानियों को अपनी योग्यताओं, क्षमताओं एवं शोधकार्य के प्रयोजन के बारे में ईमानदार होना चाहिए।

6. *समाज के प्रति उत्तरदायित्वः* अपने शोधकार्य के परिणामों को बड़े पैमाने पर समाज तक प्रसारित करना किसी व्यक्ति की एक नैतिक ज़िम्मेदारी होती है। उन्हें अपने एवं पोषक सरकारों के बीच सम्बन्धों के बारे में ईमानदार होना चाहिए। उन्हे शोधकार्य के लिए आवश्यक मंजूरी पाने के लिए अपनी व्यावसायिक नैतिकता से कदापि समझौता नहीं करना चाहिए।

अपनी प्रगति जांचें

8. एप्लाइड एंथ्रोपोलॉजी सोसायटी द्वारा उल्लिखित अनुप्रयुक्त मानवविज्ञानी के व्यावसायिक उत्तरदायित्व क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 सारांश

आजकल मानवविज्ञानी बड़ी संख्या में निजी क्षेत्रों में कार्यरत हैं। व्यावहारिक मानवविज्ञानियों को भी निजी कंपनियों द्वारा नियुक्त किया जा रहा है। इन परिस्थितियों में वह अपने नियोक्ताओं के नियमों एवं अधिनियमों में बंधे हुए होते हैं। इस तरह एक महत्त्वपूर्ण नैतिक दुविधा की परिस्थिति उत्पन्न होती है। चूंकि, मानवविज्ञानियों की व्यावसायिक नैतिकता कुछ और हो सकती है जबकि नियोक्ताओं के लाभ–अभिप्रेरणाओं के लक्ष्य एवं उद्देश्य भिन्न हो सकते हैं। इस संदर्भ में मानव विज्ञानियों को ऐसे महत्त्वपूर्ण परिणामों को प्रकाशित करने से रोका भी जा सकता है, जिनके कारण उनके नियोक्ता के लाभ में बाधा उत्पन्न हो सकती है। अतः इस प्रकार यह व्यावसायिक नैतिकता एवं नियोक्ता के लाभ–अभिप्रेरणाओं के बीच एक मतभेद की परिस्थिति बन जाती है। हालांकि, मानव विज्ञानियों को किसी भी कीमत पर अपनी व्यावसायिक नैतिकता के साथ समझौता नहीं करना चाहिए। इन परिस्थितियों में मानवविज्ञानी को एक मानवविज्ञानी कार्यकर्ता वाली भिन्न भूमिका में प्रवेश करना चाहिए। इस बात के विस्तृत वर्णन के साथ कि कैसे व्यावहारिक मानवविज्ञान में नैतिकता को देखा जाता है, इसलिए मानवविज्ञान के किसी विद्यार्थी को इस बात से सतर्क रहना चाहिए, कि जैसे ही वह किसी संस्कृति अथवा समुदाय के जीवन में उनका अध्ययन करने तथा वास्तविक समाधान प्राप्त करने में उन्हे सहायता प्रदान करने के लिए प्रवेश करते हैं, ऐसे में उनकी भूमिका किस आवश्यकता पर बल देती है, उन्हें पता हो।

3.8 संदर्भ

Bastide R. (1974). *Applied Anthropology*. London: Harper Torchbooks.

Ferraro G. and Andreatta S. (2014).*Cultural Anthropology: An applied perspective*. Stanford: Cengage Learning.

Harris M. (1968). *The Rise of Anthropological Theory: A history of theories of culture*. New York: Thomas Y. Crowell Company.

Malinowski B. (1927). "The Life of Culture". In G. E. Smith, *et al.,* eds., *The Diffusion Controversy.* New York: Norton, 26-46.

Nahm S. and Rinker C.H. (eds.). (2016). *Applied Anthropology: Unexpected spaces, topics and methods*. New York: Routledge.

Podolefsky A., Brown P.J. and Lacy S.M. (eds.). (2003). *Applying Anthropology: An introductory reader*. New York: McGraw-Hill.

Price D. (2002). "Lessons from Second World War Anthropology: Peripheral, persuasive and ignored contributions". *Anthropology Today*. (8):3- 14-20.

Web resource:https://www.appliedanthro.org/

3.9 आपकी प्रगति की जाँच के लिए उत्तर

1) अनुभाग 3.0 के पहले, दूसरे एवं तीसरे अनुच्छेद(पैराग्राफ) को देखें।

2) अनुभाग 3.1 के पहले अनुच्छेद को देखें।

3) अनुभाग 3.1 के दूसरे अनुच्छेद को देखें।

4) *अफ्रीकन सिस्टम ऑफ किनशिप एंड मैरेज।*

5) अनुभाग 3.3 देखें।

6) अनुभाग 3.4 देखें।

7) अनुभाग 3.5 देखें।

8) अनुभाग 3.6 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY